

सो० वन्दि जोरि युग पानि, गणनायक करुणा अयन ॥
होत बिघ्न सब हानि, लेत नाम शंकर सुवन ॥
बक्र तुराड भुज चार, बुद्धि पुञ्ज मङ्गल सदन ॥
लोचन शुभ रत नार, बिघ्न राज करि बर बदन ॥
नीलाम्बुज तन श्याम, कञ्जारुण लोचन सुखद ॥
मम हिय करु विश्राम, पय निधि बासी करकुमुद ॥
निगम न पावत पार, शारदादि कहि गुण विशद ॥
द्रव भञ्जन महि भार, प्रभु करुणा कर शुभ गुणद ॥
बन्दौं भव अभि राम, भव्य नाथ भवभय हरण ॥
होत सफल मन काम, जासु नाम भजि भव तरण ॥
बन्दौं गुरु पद रेणु, शुचि भेषजु भवरुज शमन ॥
मञ्जु मनोपथ फेणु, नेत्राञ्जन शुभ दृष्टि घन ॥
बन्दौं सन्त सुजान, पद सरोज रज शीश धरि ॥
अनु दिन श्री पति ध्यान, जिन भजि हरि निज वश्य करि ॥
बन्दौं बन्धु कुमार, हरत शोक लिय नाम के ॥
सुर मङ्गल आगार, प्रियतम नित सिय राम के ॥

दो०। राम नाम कलिमलहरण, दरण दोष सुख रास ।
लालमनी मन कर्मबच, निज उर कर विश्वास ॥ १ ॥
सो०। जिनके मन विश्वास, ते हरि पद नित ध्यावहीं ।
ह्वइ निःकाम तजि आस, ल्हइ बाञ्छित गति पावहीं ॥ २ ॥



बन्दौं गणपति पद जल जाता । उमातनय शिव सुत सुख दाता
सुर अनादि जानत सब कोई । प्रथम तासु जग पूजन होई
दीनदयालु बिबुध हितकारी । असुरन काल लाल त्रिपुरारी
आठ सिद्धि नव निधि के दानी । संकट हरण शरण सुखखानी
गणप समान कौन जग स्वामी । सुर मुनि मनुज जासु अनुगामी
सुनो नाथ जो बर अतिपावन । सुर विरञ्चि नारद मन भावन
जन रञ्जन सन्तन सुख दाई । जाहि भजत सुर मुनि समुदाई

सो दयालु बर मांगे दीजै। उमा सुवन जग यश कर लीजै
सियाराम पद पङ्कज नेहू। उपजै नित यह बर मोहिं देहू

दो०। देहु हर्षि बरदान यह, बिनय करौं कर जोर।
सियबर चरण सरोज रज, बाढ़े प्रीति न थोर॥

सो०। बिनय करौं शिर नाय, जाते होइ सो मोर हित।
करिये सोइ सहाय, धरौं ध्यान सिय राम पद॥

श्री गुरु चरण सरोज नमामी। सुमिरत सुलभ भक्ति अभिरामी
बिनु गुरु कृपा भक्ति हरि चहई। ते नर मूढ़ मन्द मति अहई
जो परसत गुरु होय दयाला। सो पावै हरि भक्ति विशाला
ताते नाथ बिनय यह मोरी। मन क्रम बचन शरण प्रभु तोरी
तुम स्वामी मैं सेवक तोरा। औगुण सकल क्षमहु प्रभु मोरा
करौं नाथ मैं एक ढिठाई। हरि प्रेरित जो मम उर आई
अजर अमर सुख सिन्धु बिहारी। जाकर ध्यान धरत मद नारी
शुक सनकादि सिद्ध मुनि नारद। सहसानन चतुरानन शारद
रहत सदा चरणन अनुरागी। सोइ बर नाथ देहु मोहिं माँगी

दो०। हाथ जोरि बर माँगहूं, दीजै परम उदार।
जन्म जन्म सिय राम पद, बाढ़े प्रेम अपार॥

सो०। जापर तुम अनुकूल, राम भक्ति सोइ पावहीं।
सुकृत सुमङ्गल मूल, जे नर नित हरि ध्यावहीं॥

बन्दौं उमा प्राण पति चरणा। संशय शोक मोह भ्रम हरणा
मुद मङ्गल मूरति शिव शंकर। शमन दोष रिपु काल भयंकर
नाम बिदित जग औघड़ दानी। उमा शक्ति जेहिं बेद बखानी
करौं प्रणाम धरणि धरि माथा। मन भावत बर माँगौं नाथा

सुर बिरञ्चि नारद सनकादी । कबि कोबिद परमारथ बादी
काकभुसुराड गरुड़ जेहि भाँती । धरत ध्यान जाकर दिन राती
तुमहूं जाकर ध्यान धरेहू । सोइ बर सुलभ उमा बर देहू
हरि पद पङ्कज प्रीति अपारा । देव दया करि देव उदारा
होयँ मनोरथ पूरण मोरे । केवल नाथ अनुग्रह तोरे
दो०। यद्यपि अधम मलाय तन, तदपि कहौं कर जोर ।
क्षमऊ सकल अपराध मम, हेरि आपनी ओर ॥
सो०। सुनिये शम्भु सुजान, बिनै मोरि करुणायतन ।
दीजे यह बरदान, हरि पद भजि भवनिधि तरौं ॥
बन्दौं शिर धरि रज पद गङ्गा । जेहि मज्जन होवे अघ भंगा
महिमा अमित बिदित तिहुँ लोका । मज्जन पान हरति सब शोका
जे रज शिर धरि ध्यान लगावैं । बिनु प्रयास सुर धाम सिधावैं
है प्रताप जग गङ्गा माई । कीरति कलित चहूं दिशि छाई
गङ्गा बहुत पतित तुम तारे । तारेजिते गगन नहिं तारे
भागीरथ सम को परमारथ । जिन निज हेतु कीन जग स्वारथ
मातु एक मन है अभिलाखा । कहौं सो प्रकट गुप्त नहिं राखा
जेहि खोजत सुर फिरें भुलाना । उमा समेत धरें हर ध्याना
सोइ ध्यान धरि हरि पद ध्याऊं । मातु सो यह बर मांगे पाऊं
दो०। महिमा अमित देव सरि, अधम उधारण हारि ।
पावन सुयश सुमुक्ति हित, कही कबिन बिस्तारि ॥
सो०। दिन दिन बढ़ अनुराग, पद पङ्कज सिय राम के ।
कपट लोभ मद त्याग, भजौं निरन्तर ध्यान धरि ॥
बन्दौं मन क्रम बचन त्रिबेनी । आरति हरणि सकल सुख देनी

तीरथ अखिल मनोहर धामा । दृष्टि परत छूटत गत कामा
ताके निकट बसत मुनि वृन्दा । लहत चारि फल करत अनन्दा
औरे त्रिभुवन तहँ जप तप योगा । पावैं मन वाञ्छित सुख भोगा
परसि अक्षय वट वेणीमाधव । होयँ सनाथ सिद्ध मुनि साधव
मज्जन यमुन सरस्वति गङ्गा । जाते होय दिव्य मन अङ्गा
भरद्वाज मुनि वर पद लागी । होयँ विमल मति मूढ़ अभागी
तीरथराज प्रयाग बड़ाई । शेष सहस मुख सकैं न गाई
लालमनी किमि कहै बखानी । मति बुधि मोरि चकित भ्रम सानी

दो०। ताते सुमिरत शारद तुव, विनय करौं कर जोर।
देहु रामपद प्रीति वर, जेहि विधि सब हित मोर॥

सो०। चहौं कलिकुल त्याग, देहु भगीरथ माँगे मोहीं।
जेहि विधि बढ़ अनुराग, जन्म जन्म सिय राम पद॥

बन्दौं सखा कपीस हनुमाना । जासु सुयश प्रभु आपु बखाना
पद पङ्कज हरि के तुम पायक । दुष्ट दलन जन दीन सहायक
बुद्धि निधान ज्ञान गुणसागर । संकट मोचन नाम उजागर
पवनकुमार अञ्जनी बारे । लषण राम सिय प्राण पियारे
पर उपकार सदा मन माहीं । अस को जो जग जानत नाहीं
करौं विनय कछु कहि न सिराई । जो न कहौं तो होत खोटाई
सुनौ पवन सुत आरत बानी । करौ छोह निज सेवक जानी
जाको भजन करत गौरीशा । धरत ध्यान सुर सिद्ध मुनीशा
मम उर सोइ ध्यान बहु प्रेरौ । यह वर देहु दया करि हेरौ

सो०। जेहि विधि होवे मोर हित, करिये पवन कुमार।
बिना भजन सियराम के, मिलै न भवनिधि पार॥

सो०। सकलकाल हित मोर, हरि पद पङ्कज के भजे।
कहौं तुम्हें कर जोर, यह बर मुझको दीजिये॥

बन्दौं दशरथ पद जलजाता। भये सुवन जिनके सुर त्राता
इन सम धन्य कवन संसारा। जिन घर ब्रह्म लीन्ह अवतारा
पुनि कौशल्या चरण नमामी। जिनके तनय भये सुरस्वामी
धन्य कौशिल धनि सुकृत सुता के। खेलत गोद ब्रह्म शिशु जाके
सुर मुनि सिद्ध समाधि लगावें। करि जप योग ध्यान धरि ध्यावें
ते सपन्यहु न दर्श अधिकारी। सो प्रभु दशरथ अजिर बिहारी
बन्दौं केकयि पद शिर नाई। भे सुत भरत कीर्ति जग छाई
बहुरि सुमित्रा पद परणामा। भये शेष सुत जग अभिरामा
लक्ष्मण नाम विदित दिशि चारी। सदा राम पद आज्ञा कारी

दो०। रिपुसूदन लक्ष्मण अनुज, भये सुमित्रा तात।
लघु अनुगामी भरतके, सकल भुवन विख्यात॥

सो०। चारौं सुत सुख धाम, नृप दशरथ के लाड़िले।
करौं तिनहिं परणाम, जोरि पाणि शिर नायके॥

बहुरि राम सुख धाम नमामी। भक्त बछल सब अन्तरयामी
सीता चरण जोरि जुग पाणी। करौं प्रणाम कर्म मन बाणी
बन्दौं अवध पुरी शुभ धामा। पावन मुक्ति धाम अभिरामा
निकट पुनीत सरयु सरि बहई। जेहि मज्जन ते सुर पुर लहई
पुनि नर नारि अवधपुर वासी। अति सुकृती सुद मङ्गल रासी
सरल सुशील सुमति मति भोरी। जिनहिं राम पद प्रीति न थोरी
तिनके चरण कमल कर जोरी। हौं प्रणामौं युग कोटिन्ह मोरी
होउ सो सो पर मम अनुकूला। देउ हर्ष सह बर सुख मूला

सदा राम पद सुमिरण करहू । ज्ञान उपायन भवनिधि तरहू ॥
छं०। जेते चराचर अवधवासी राम प्रिय जिनके मना ।
तिनको युगल कर जोरि कै मङ्गल करौं पदवन्दना ॥
मोहिं जानि निज किंकर सदा शतिकमल पद प्रभु दीजिये ।
सुरलोक माहिं महिं मराडली दै भक्ति वर यश लीजिये ॥
दो०। देव चराचर अवधजे, थल चर कीट समेत ।
खग पतङ्ग पुनि कुसरु रज, विनवौं तिन निजहेत ॥
सो०। दनुज किन्नर गन्धर्व, सिद्ध पिशाचहि यक्षगण ।
करो कृपा मिलि सर्व जानि दास मोहिं आपनो ॥
सुमिरौं शारद पद कर जोरी । होय लालसा पूरण मोरी ॥
देहु सुज्ञान विमल मति मोहीं । ताते विनय करौं मैं तोहीं ॥
जो तुम मोपर होउ सहाई । तो वरणौं हरिगुण सुखदाई ॥
करो अनुग्रह मोपर सोई । जिहि बिधि मोर मनोरथ होई ॥
देहु वाक विद्या बरदाना । जाते मोर परम कल्याना ॥
करो बास रसना कछु काला । करौं गान हरि चरित बिशाला ॥
स्वास लेइ जिमि भस्त्र सरीरा । तैसे बिन हरि भजन शरीरा ॥
या भवसिन्धु अगाध अपारा । बिना भजन हरि पाउन पारा ॥
जो चह पार बिना खेवनारा । अवशि बूड़ि जैहै मँझधारा ॥
दो० बुद्धिहीन अति मन्दमति, सूझ न एक उपाय ।
कीन्ह चहौं हरिगुण विशद, करो सो वाक सहाय ॥
सो०। माँगौं यह बरदान, जाते होवै विमल मति ।
हरिगुण करौं बखान, बुद्धि विमल यश पायके ॥
बन्दौं कवि पद रज शिर धारी । जिन हरि कीरति कही बिस्तारी ॥

अतिहि बिचित्र परम सुखदाई । कीरति कालिल रही जग छाई
काव्य सूर कृत तुलसीदासा । केशव भाषित बिदित चहुँ आसा
सो जानब हरि नाम सहाई । कोउ हरि भजि नहिं लह्यो बड़ाई
पुनि कलिकाबिन करौं परनामा । जिन बरन्यो नर चरित ललामा
कही काव्य सब भाँति सुहाई । छन्द प्रबन्ध अनेक बनाई
भगवत चरित कह्यो नहिं गाई । जन्म पदारथ वृथा गँवाई
तिनकी काव्य सोइ कछु कैसी । भूषणहीन भामिनि है जैसी
गुणन अलंकृत बहु बिधि बनी । पाट कञ्चुकी कुंजकि तनी

दो०। तिनका प्रथम काव्य सम, सत्य कहौं तजि मत्स्य ।
साँच आँच नहिं लागहीं, शिव बिरञ्चि श्रुति साख्य॥

सो०। सब प्रकार गुणहीन, भाषित अदेशी मोर कृत ।
जानिहैं सुजन प्रवीन, जो कछु छुटि कर देखिहैं॥

भाषा भणित न जानौं भोरे । कहौं सुलभ्य सुबाल कर जोरे
नहिं कबि नहिं कोबिद गुणखाना । अति मति मन्द महा अज्ञाना
करत काव्य मन सिकुरत ऐसे । लाजोरी कर पसरत जैसे
करिय उपाय सो आवत नाहीं । तासों बिनय करौं सब पाहीं
होउ सहाय जानि मोहिं किङ्कर । करौं कथा भगवत गुण सुन्दर
जानत सकल जीव अबिनाशी । बिनु हरि भजन भ्रमें चौरासी
अस बिचारि सुर मुनि नर ज्ञानी । रटहिं भजैं रामै मन मानी
बिनय बिबेक भक्ति अनुरागे । राम सनेह सुधारस पागे
तिनके चरण सरोज मनाऊं । जाते भुक्ति मुक्ति गति पाऊं

सो०। बार बार शिर नायके, बिनय करौं कर जोर :
करत कथा हरि गुण बिशद, लगैं नहीं कछु खोर॥

सो०। विप्र कवीश्वर सन्त, क्षमौ मोर अपराध सब ।
बरणौं गुण भगवन्त, कृपा दृष्टि अवलोकिये॥

कर्म धर्म नहिं ज्ञान बिरागा । नहीं नीति शुभ गुण अनुरागा
केवल हरि गुण करौं बखाना । जाते मम सब विधि कल्याना
राम नाम शुचि औषध पूरण । शमन मोह भव रुज सम्पूरण
बिदित निगम इतिहास पुराना । भजन भाव सम नहिं कछु आना
जिनहिं सनेह राम पद लागा । सुर मुनि सिद्ध सराहत भागा
मन क्रम बचन राम प्रिय जावे । सुख सनेह रहित निज छावे
लोभ क्रोध कामादिक जेते । मत्सर मोह मदादिक तेते
हैं सब अनुचर माया केरे । ते कबहूं आवत नहिं नेरे
राम प्रताप समुझि मन माहीं । देखित तासु सब दूरि पराहीं

सो०। धन्य सुकृत धनि भाग नर, जिनहिं राम पद प्रीति।
तिनहिं युगल कर जोरि कै, बन्दौं सहित विनीति॥

सो०। धन्य घरी धनि जन्म, धन्य तात धनि मात सो।
धन्य जे नर शुभ कर्म, भये जे हरि पद पद्म रति ॥

जन्म भूमि मम बेहटा गाऊं । परगन्न कोड़ा तास बताऊं
विदित हमीर पूर ढिंग ग्रामा । यमुना निकट उत्तर दिशि श्यामा
पाताले श्वर धाम सुहावन । सदा सुखद अघ पुञ्ज नशावन
आश्रम श्री दुर्गा महरानी । वरदायिनि सब बिधि कल्यानी
शुभ मन्दिर जिय बलिहारी । सहित प्रिया वृषभानु दुलारी
ताके भजत भजत भव बाधा । बिनशत सन्त होहिं अगाधा
सुगलि मनोहर सुन्दर धामा । सुमिरत होत सिद्ध मन कामा
देवनदी सरि दक्षिण आई । मिली पूर्व यमुनहिं सुहाई

संगम महेश्वर तहँ अस्थाना । सिधिदायक त्रिभुवन भगवाना

दो०। तेहि आश्रम कछु कालते, भयो उदर हितवास।
सब प्रकार सुखही लह्यो, भई पूर मन आस॥

सो०। भयो लह्यो अनुराग, बिन भजन हरि बादि सब।
करिये श्रम सब त्याग, कछु क गान भगवत चरित॥

नमो रमापति अघ अघहारी । अलज्जाकरालोचन सुखकारी
अद्भुत रामायण सुखमूला । सुनत श्रवण बिनशत भवशूला
प्रथमहिं बाल्मीकि मुनिगाया । भरद्वाज मुनि वरहिं सुनाया
सोइ मम चाहत मोहिं अभिलाषा । सारा सुगम न होय भुलाषा
तेमुनिनाथ करहु पदलागी । करि भाषा वरणाउँ अनुरागी
राम कलेवा गुरु उपकारा । चाह्यों प्रथम भो बोध अपारा
अब सुनि जो श्रोतन हित होई । करब प्रबन्ध कथा मैं सोई
सब चौपाई पुनि इक दोहा । तेहि प्रति एक सोरठा सोहा
बरणाब जहँ तहँ सहित विवेका । छन्द प्रबन्ध विचित्र अनेका

दो०। होउ शुनि सन्वाद भो, ब्रह्मावर्त्त सुधाम ।
सो मैं काब्य हेतु सब, सुमिरि राम गुणग्राम॥

सो०। चलौं जो भाषा बोध, होय न कबहूं भरम पथ।
यहि विधि करि मन बोध, वरणकथा भगवत सुखद॥

श्रीगुरु चरण धूरि सिर नाई । करौं कथा हरिगुण सुखदाई
जेहि कारण हरि नर अवतारा । लीन्ह दयालु हरण महि भारा
कीन्ह जो लीला परम सुहाई । निगमागम कवि कोविद गाई
कहत सुनत अन्त नहिं होई । तारणतरण परायण होई
हरिके चरित विचित्र अनन्ता । शारद शेष न पावत अन्ता

ज्ञानमनी बरणौ केहि भाँती । बुधि मलिन अमित अधम जड़ मती
संस्कृत नहीं कछू अभ्यासा । होय कौन विधि मन विश्वासा
केवल रामनाम कर आसा । कहौं कथा अद्भुत कहि भाषा
सम्वत उनइस से इकतीसा । सुमिरि गणप गुरु गौरि गिरीसा

दो०। मास असाढ़ लखौं शुभ, तिथि दुतिया शशि वार।
सिर धरि रज पद श्री पतिहि कीन्ह कथा परचार॥

सो०। सुनिये सन्त सुजान, प्राण प्रिय रघुनाथ के।
मधुर कथा भगवान, सावधान मन ध्यान धरि॥

बालमीकि मुनि परम सुजाना । ज्ञान विरति विज्ञान निधाना
निवसहि हेमगिरि आश्रम चारू । भक्ति विवेक मुक्ति भण्डारू
भरद्वाज मुनि तहँ यक बारा । आये मिलन मुनिहि आगारा



तहँ मुनि हर्षि मिले उर लाई । स्वागत पूँछि निकट बैठाई
बोले भरद्वाज कर जोरी । सुनिय दयालु विनय इक मोरी
महाराज तुम अन्तरयामी । हौ सर्वज्ञ अखिल के स्वामी
कह्यो कोटि शत जोइ श्लोका । जासु प्रशंसा सुर विधि लोका
शिव ब्रह्मा विष्णु इन्द्र सनकादी । पढ़त सर्ग सधि सब श्रुति बादी

ब्रह्मादिक यह ग्रन्थ सुपाई । भाग विभूति सुरनके आई ॥

दो०। विंशति चार सहस्र प्रभु, हैं जो जग इसलोक।
सो सुनि श्राश्रम सुखनते, नर पावत सुरलोक॥

सो०। आवागमन न होय, सुनै जो कोई ध्यान धरि।
सुन्यो नाथ मैं सोय, सावधान अनुराग युत॥

तदपि न बुझी नाथ मम प्यासा । ज्ञानसिन्धु आयो तुम पासा ॥
करो दयालु कृपा अब सोई । जाते तृषा बुझा मम होई ॥
जो नहिं कथा सुनी मैं सोई । कहौ नाथ रघुकेतनि गोई ॥
हँसि बोले मुनि सुनि मुनि बानी । अनतु उदार सकल सुखखानी ॥
अद्भुत कथा सुनावौं गाई । भरद्वाज मुनि सुनु मन लाई ॥
है यह कथा जगत सों न्यारी । श्रवण सुनत सुख भय दुखहारी ॥
प्रथमहिं पृच्छा हिय कहि कीन्हा । राखेउ गोय उतर नहिं दीन्हा ॥
गोतम मुनि मम परम सनेही । तुम्हें बिहाय सुनाउब केही ॥
तुम्हीं समुझिहौ मुनि परवीना । रसिक निपुण अरु हरि रसलीना ॥

दो०। ये हैं प्रश्न तुम्हारे, ऐसे रत्न अमोल ।
लहत जौहरी सन्मुखहि, मणि माणिक को मोल ॥

सो०। सुनो राम अवतार, जेहि कारण भो जगत में।
कहौं सो मति अनुसार, चरित सुखद पावन परम॥

भूप अवधपति मंजु सुजाना । कर्म धर्म नृप नीति निधाना ॥
सह धर्मिणी तासु पतिव्रता । मन क्रम वचन सेवति पद रता ॥
रामनाम निशि दिन सुख कहई । एकादशी व्रत सो नित रहई ॥
एकबार जब वह व्रत आवा । बिनु जल भोजन दिवस बितावा ॥
पति संग विष्णु देवालय गयऊ । निशि विश्राम करत तहँ भयऊ ॥

तेहि निशि वाक गगन ते आई । श्रीपति निज मुख ताहि पठाई

जानि प्रसन्न भानु नृप सोहीं । माँगहु वर इहि देउँ मैं तोहीं ॥

गद्गद गिरा विनय कर लीना । देहु न सुता स्वास अधीना

पुनि माँग्यो धरि शिर हरि हाथा । देहु एक सुत त्रिभुवन नाथा।

दो०। राजन राजा होय प्रभु, और भक्त शिर ताज।

तासु हृदय यह वासना, बसै गरीब निवाज ॥

सो०। एवमस्तु सुख साग, भई तुरत आकाशते।

ऐसे वचन सुहाग, मनो [illegible]॥

और भक्ति को यह फल पायो । सुरवाणी सेवक फल आयो

आनँद पूर्वक सो फल खाई । पूर्ण मनोरथ मन की पाई

फूल्यो कुमुदहि कमलन आली । गर्भ सहित भइ तुरत सयानी

भयो पुत्र बीते दस मासा । तेज पुञ्ज जनु रवि परकासा

ताको नाम लिख्यो जग सोई । अम्बरीष जानत सब कोई

विद्या धनी नहीं सम दूजा । करत सदा श्रीपति पद पूजा

कछुक काल यहि विधि चलि गयऊ । पिता तासु तनु व्यापित भयऊ

राज्य भार अपने शिर लीन्हा । पालन प्रजहिं विविधि विधि कीन्हा

पावन आत्म राज्य परहाये । हेतु तपस्या वनहिं सिधाये

दो०। करत तपोबल अस नीति, बीति गये बहु काल।

श्वास अधीन वास हरि, तहँ तज्यो महिपाल ॥

सो०। आयु परीक्षा पाय, श्रीपति तब बैकुण्ठ दई।

धरे रूप सुर राज, गरुड़ सेव सेनापती ॥

नमित चरण श्रीपति जगनन्दन । रघुकुल तिलक कौशलानन्दन

वाल्मीकि मुनि हरि गुण गावन । भरद्वाज मुनि सुनि सुख पावन

कहाविष्णु मैंहौं सुरराजा । आयोंसफलकरनतवकाजा
जोइच्छा नृप होयतुम्हारी । सोवरमाँगऊमनहिंविचारी
देखिआचरणभूपतितोरे । उपजी दयाहृदयकछुमोरे
औरनकछुजानासिमनमोरे । करिहौंपूर मनोरथ तोरे
जानिप्रसन्न आज नृपमोहीं । मनभावत वरदेहौं तोहीं
बोले परमभक्त तब राजा । सुरपति सोंनमोहिंकछुकाजा
मेरेतोध्यान विष्णुकोनासा । करिहैं वही पूर सब कासा

दो०। हरिको छाँडि के औरसों, नहिं माँगों वरदान।
जाव सुरे अमरलोक निज, मानिशिरा परमान ॥

सो०। सत्य वचनसुनि कान, छल विहीन भूपालको।
भे प्रसन्न भगवान, निजस्वरूप प्रगटत भयो ॥

अविचलभक्तिनृपतिकीमाना। तुरतरूपनिजधरि भगवाना
चतुर्भुजी तहं रूपदिखायो । सुरमुनिनिकृतजेहिनाहिंपायो
चक्र आदि आयुधकरधारे । औरमुकुटशिरकचघुंघुवारे
भालतिलककेशरको सोहै । चपलाशोभुतिदेखतछबिमोहै
श्रुति कुण्डलमकराकृत राजत । झिलमिलातरतिपतिमनलाजत
करिनिन्दकभुजचारिविशाला। कम्बुकण्ठशोभितवनमाला
आनन चन्द्र मनोहर हासा । अरुणअधरशुकनिन्दकनासा
भृकुटीकुटिलकमलदललोचन। चितवनललितआरतदमोचन
रदपटअरुणदशनज्योंहीरा । त्रिवलोदरत्रिभिभँवरगँभीरा

दो०। जानुजङ्घापदकञ्जको, शोभावरणि नजाय।
जहाँनित्य अज शंकर हू, करत विनयशिरनाय ॥

सो०। पीताम्बर कृशगात, शोभितदीनदयालुके।

मनो अमित प्रभात छवि ताकी नहिं जात कहि ।

नख द्युति चरण करोनहिं जाई । मुनि मन मधुप रहत जहँ छाई
मृदु मुसकान मनोहर बयना । विनय नृपति तन राजिव नयना
कहहु मांगु बर आवत जीका । देउँ तुम्हें नहिं होय अलीका
बोले भूप जोरि जुग हाथा । देहु भक्ति अपने पद नाथा
कबहुं न घटै हृदय ते मोरे । अनुदिन बढ़ै अनुग्रह तोरे
हँसि बोले श्रीपति भगवाना । दीन्ह तुम्हें बर भूप सुजाना
भये प्रसन्न आनि प्रभु निज मन । दीन्ह नृपति को चक्र सुदर्शन
विपद काल में करै सहाई । लेहै शत्रु ते तोहिं बचाई
जाहु भवन अपने महिपाला । कहौ जाय प्रभु [illegible]लिपाला

दो० । सत्य सिन्धु करुणायतन, दीनबन्धु भगवान ।
देहु भक्ति अनपायनी, पुनि भे अन्तर्धान ॥

सो० । अम्बरीष सिरताज, आय अवध अयनके ।
लगो करन नृप काज, बैठि सिंहासन राजपर ॥

नमत चरण श्रीपति सुखखानी । बालमीकि मुनि कहत बखानी
श्रीमति नाम रूप उजियारी । अम्बरीष घर भई कुमारी
गुणन आगरी अति छविशाला । भई विवाहन योग सो बाला
ब्याह सोच भो पितहिं अपारा । जनक बाल यह भइ संसारा
नारद मुनि पर्वत मुनि दोऊ । आये अवधपुर इक दिन सोऊ





देखि कुमारी रूप लोभाने । भये अवश मन रहन ठिकाने
पूछी नृपहि कहो या बारू । को है कवन पिता है तासू
बोले नृपति सुनो मुनि सोई । श्रीमति यह कन्या मम होई
मुनि वृत्तान्त सुथित मन भयऊ । करि एकान्त नृप नारद कहेऊ
दो०। सुता तुम्हारि मनहरन, भई हमें अति चाह ।
करि विचार नृप तासुको, हम संग करो विवाह॥
सो०। पुनि पर्वत यह चाल, कह्यो एकान्त नृभूप सों ।
देहु सुतहिं म्वाहि तात, वेद रीति कुल धर्म सों ॥
बोले भूप जोरि युग पानी । सुनो विनय दोउ मुनि विज्ञानी
जा दिन होय स्वयम्बर शाला । आयो दोउ मुनि दीन दयाला
करौ परीक्षा निज निज भाला । और उपाय न सुझि तेहि काला
करिहै जाहि पसन्द कुमारी । दैहौं ताहि सो बिनहिं विचारी
मुनि नृप वचन श्रवन है रहेऊ । विष्णु लोक दोउ गमनत भयऊ
कहा विष्णु सों नारद जाई । है कारज यक करो सहाई
पर्वत रूप कपीशहि होई । जाने कन्या और न कोई
कहा विष्णु सुनि ऐसहि होइहै । मन अभिलाष तुम्हारी रहिहै

गे नारद पर्वत मुनि आये । समाचार कहि विनय सुनाये

दो०। जा दिन जाय स्वयम्बर, नारद कृपानिधान ।

दैउ रूप भल्लूक को, दीन बन्धु भगवान ॥

सो०। और न देखै कोय, एक कुमारी छोड़िकै ।

होइहै ऐसहि सोय, कह्यो बिहँसि करुणायतन ॥

श्रीपति अस साक मह करजोरी । बालमीकि मुनि चाहत बहोरी

ब्याह हेतु नृप रच्यो समाज । आये तहँ अगणित महिराज

ऋषि मुनि सहित सुर गन्धर्व । सचिव महाजन परजन सर्व

नारद पर्वत हर्ष बढ़ाई । सुनत स्वयम्बर पहुँचे धाई

करि शृंगार सखिन सँग बाला । कर सरोज सुन्दर जयमाला

रत्न जटित शिर बेनी सोहै । बाल इन्दु छवि निरखत मोहै

शीश फूल छवि बरणि न जाई । मनो छटा विद्युत अधिकाई

छुटबन्धन सो गूंथी चोटी । उपमा किरण निशाकर छोटी

निरखि अलक मेचक लहराई । भागि दूरि नागिनि दुरि जाई

दो०। श्रवणन कर्णफूल द्युति, मनो तड़ित छवि लेत ।

बाल अरुण सारवि निन्दक, अलिमय शोभा देत ॥

सो०। टीका जटित विशाल, जैसे द्युति उडुगण लसित ।

सोहत सुन्दर भाल, बाल इन्दु छवि छीनकै ॥

देखि विशद सुभौंह निकाई । इन्द्र धनुष लजगयो दुराई

मार कमान भ्रुव देखि लजाने । मृग शावक वन जाय छिपाने

देखि कपोलन की अरुणाई । रक्त कमल रँग गयो उड़ाई

शुक निन्दक नासिका सुहाई । निरखि कीर वन दुरे लजाई

अधर अरुण लालित्य सुभ्राजे । रदद्युति कुन्दकली सम छाजे

निरखिवदनशशिसरिसप्रकासा। मुनिचकोरमनपरमहुलासा॥
सुनिमृदुवचनशोषउरलाई। वनप्रियविपिनरहीसकुचाई॥
मन्दमधुरलखिमुखमुसकाई। शुकप्रियउरदरारबक्रताई॥
चिबुकसुभगज्योंकूपअमीके। देतअमितछविनिरखतनीके॥

दो०। चिबुक मनोहर छबिललित, मनो अमीके कूप।
देत बनत पटतर नहीं, शोभा अमित अनूप॥

सो०। धर रस कुण्ड भराय, जगयोनी रच पट तरे।
करत पान हर्षाय, सन्त सुमति ह्वै भक्त ते॥

कण्ठकलितमनहर्षबढ़ावत। भवकलितलखिमोरपरावत॥
मुक्तावलीशिरोध सोहाई। मनोदीसि उडुगणाअधिकाई॥
हस्तशिरोतन अङ्कुर राजत। कोटिप्रभाकरलखिद्युतिलाजत॥
उदररेख त्रिबली तिरवेनी। परत दृष्टि सज्जन सुखदेनी॥
लखि निम्नोदर भँवर गँभीरा। खातचन्द्रचित्तसरितअधीरा॥
श्रोणिफलकसुन्दरमनभावन। अमितचित्तभृंगराजलजावन॥
पदपङ्कज पुनि जावक शोभा। मुनिमनमधुपविलोकतलोभा॥
छबि श्रृङ्गार रूप की राशी। मनोदीसि उडुशशिमरकाशी॥
उपमा को असकविजोकहई। पटतरसकलभवनलघुअहई॥

दो०। नीलवरण सारी सुभग, सोहत गोर शरीर।
छवि श्रृङ्गारहि जो कहे, को अस कवि मतिधीर॥

सो०। है जो लक्ष्मी रूप, शोभा ताकी को कहे।
अद्भुत कला अनूप, रूप राशि मन मोहनी॥

ठिठुकत चलत धरत पगधीरे। लाजसँकोचजननकेतीरे॥
यहविधिराजमहलमेंआई। जहँसमाज सब साज बनाई॥

देखत सभा जब रूप कुमारी । भये छकित तन दशा बिसारी
जो जहँ तहँ तैसहि रहि गयऊ । चित्र लिखेसे सोन्हहि रहऊ
सकल सभा दिशि देखि कुमारि । लह्यो न बर कोउ निज अनुहारी
मनहीं मनहिं बिसूरति ठाढ़ै । सुमिरति बिष्णु नाम मन गाढ़े
तुम प्रभु करुणासिन्धु अगाधा । पूरण करो नाथ मम साधा
तुम्हें छोड़ि मैं कासों बरऊँ । और पुरुष नहिं मन तर धरऊँ
करो लालसा पूरण नाथा । मोरि लाज प्रभु तुम्हरे हाथा

दो०। रमारूप बाला धरे, ढूँढ़त बर अनुरूप ।
परयो न कोऊ दृष्टि तर, नर मुनि सुर गन भूप ॥

सो०। गड़ी दृगन की कोर, रूप रथा मम्भी कान्ह की ।
नारद पर्वत ओर, तनक न देख्यो भूलि कै ॥

भयो शोक दोउ मुनि मन भारी । हम दिशि कुँवरि न रञ्च निहारी
इहि कुँवरि जो हम दृग परई । हमैं बिहाय आन को बरई
सभा मध्य मुनि बनि ठनि बैठैं । अकड़े फूले तन तन ऐंठैं
जेहि अवली नृप कन्या जाई । तेहि पङ्क्ती मुनि बैठें धाई
बार बार इत उत उठि बैठैं । रह चुप साधि हाथ दोउ ऐंठैं
बहुत कीन्ह मुनि युक्ति उपाई । तबहूँ कुँवरि निकट नहिं आई
कह राजा तब कुँवरि हँकारी । देखु सभा सब ओर निहारी
ये नारद पर्वत मुनि दोई । बैठ सभा इन सम नहिं कोई
लखु रञ्चक तुव आँख उठाई । दे जयमाल कण्ठ पहिराई

दो०। आयसु मानि पिता तब, देख्यो दृष्टि उघार ।
रही सिसकि मुनि रूप लखि पै, देखि रूप भजि कार ॥

सो०। डरत भई उर माहिं, देखि भयानक रूप मुनि ॥

सहमि गई थिर नाहिं, कम्पगात रोमा वली ॥

कहा नृपति सुनु राजकिशोरी । कोहि कारण मुनि लखि मुख मोरी
बोली कुंवरि पिता दिशि हेरी । हे कारण सुनिये नृप मेरी
यहँ नारद पर्वत कोउ नाहीं । हैं दुइ भालु कीश यहि ठाहीं
पुनि पितु कह सुनु राजकुमारी । दे जयमाल एक उर डारी
पुनि दीख्यो मुनि ओर कुमारी । बोली वचन मधुर सुखकारी
मरकत भालु बीच यक रूपा । ओढ़ि पितांबर बैठ अनूपा
षोड़श वर्ष अवस्था जासू । कीट मुकुट राजत शिर तासू
प्रभुता शोभा चमक द्युति कैसी । किरण समूह दमक रवि जैसी



ऐसे वचन सुनत नय भयऊ । सकल सभा मुख द्युति उड़ि गयऊ

छं०। श्रीनाथ करुणापुञ्ज श्री हित मध्य संसद जायके।
प्रगटन लख्यो स्वरूप नर मुनि गुप्त बैठे आयके ॥
ते समय लखि श्री मती आई निकट बहु हर्षायके।
जैमाल दीन्ह्यो डार प्रभु गल युगल हाथ उठायके ॥
सुर देखि कौतुक शिरीधर नभ दुन्दुभी धुनि लावहीं।
करि गान नृत्यें अप्सरा बहु सुमन सुर बर्षावहीं ॥
गहि बाँह सुर नर नाह कन्यै साथ लै अपने गये।

बैठे समाजे सनुज ऋषिमुनि देखि सब चकितभये ॥

दो०। पुनि समुझाई सारिका, करि हठ भूप प्रवीन ।

जाय निकट तब अम्बर, डार हार गल दीन ॥

सो०। सुमन वृष्टि तेहि काल, सुरन कीन्ह आकाश ते ।

जयजय दीन रसाल, करत अङ्गना गान नभ ॥

भइ तब लुप्त दृष्टि ते बाला । गगन शब्द आई ततकाला

श्रीमति वाञ्छा पूरण भयऊ । जौनिजो आदिशक्ति की रचऊ

आये विष्णु रमा के नाथा । आदर सहित गये ले साथा

लखि आश्चर्य सभासद भूपा । गमने आश्रम निजनिज रूपा

गिरयो शोक गिरि पर्वत ऊपर । नारद परयो अश्म छाती पर

कीन्ह गमन मुनि विष्णुहि लोका । पहुँचे भरे दृगन जल शोका

कहा विष्णु सों सुनो कृपाला । तुम सब जानो दीन दयाला

कपट हँसेउ जो मध्य हमारे । बैठ आय तेहि मम न निहारे

जैसे बास सुमन उड़ि जाई । तैसहि गा लै कुँवरि भगाई

दो०। दीन्ह विपुल दुख सेवकन को, लैगयो बाल अनूप ।

है यह काम तुम्हारो, सुनो नाथ सुर भूप ॥

सो०। है परकट संसार, नाम तुम्हारो नाथ जी ।

कीन्ह कहा करतार, ऐसो तुम्हें न चाहिये ॥

बोले विष्णु सुनो मुनि सज्जन । काम क्रोध कबहूँ नहि छज्जन

रहत मोह माया सों न्यारे । हैं हम त्रिभुवन के रखवारे

छल अरु दम्भ सों हमैं न काजा । वृथा शोक मुनि मन उपराजा

बैठ्यो तुम आय पहँ जोई । होइ है ज्ञानवान वपु कोई

कह्यो बात जो मति अनुसारी । सो आश्चर्य न मुनि व्रत धारी

बहुत असुर ऐसे बलवाना । निज स्वरूप पलटत मन माना
यिह मेरे तन के हैं न्यारे । विशद प्रकाश बसन अनियारे
गदा शंख औ पद्म सुदर्शन । ये सरवास मेरे तन दर्शन
कहु मुनि कच हमसे अस काजा । होइ है दोष देत माहिं लाजा

दो०। करि विचार समझो मुनी, तुम तो परम प्रवीन।
की यह काम हमारो, की औरै कोइ कीन॥

सो०। कह मुनि साँच दयालु, फिर तुम्हरे मन का बसी।
कीन्ह हमें कपि भालु, मध्य सभा बिनु काज के॥

कह जाकी इच्छा जस होई । देत ताहि मोहिं बैर न होई
पायो नारद जो बर माँगा । भयो सुफल पर्बत अनुरागा
समुझो मुनिन कहब फिर भूले । काके फूल फुलाये फूले
जो करत्यों बरसों इनकारा । मृषा होत सब परश हमारा
काज हमैं बरदान दिये से । नहिं कारज कछु काम किये से
हृदय क्रोध अभिमान मिटावो । अपने सुख सों न्याय चुकावो
सुनत बाक मुनि रह्यो चुपाई । चले अवध मन क्रोध बढ़ाई
पहुँचे अम्बरीष के पासा । बोलत बचन जनु अहि दुर्बासा
है तव चूक सबै सहि धाला । कीन्ह कुँवरि बिनु हमैं बिहाला

दो०। हमें आश में राखिके, दीन्ह और को बाल।
हैं हम बश अब क्रोध के, लेउ शाप ततकाल॥

सो०। जैस फँसे हम आय, प्रीति जाल के ख्याल में।
तैस तिमिर में जाय, बसो नृपति मम शाप ते॥

तुरतै प्रकट भई अँधियारी । जैसे मेघ घटा अति कारी
ज्योति सुदर्शन कीन्ह प्रकाशा । भई सुति तहाँ तुरत तम नाशा

लखि कौतुक मुनि दोउ भागे। चक्र सुदर्शन पाछू लागे



जित देखत तित चक्र दिखाई। गये युगल मुनि सहमि सुखाई
खायो चक्र चक्र के मारे। विष्णुलोक तब जाय पुकारे
त्राहि त्राहि श्रीपति भगवाना। तुम बिनु रक्षा करै को आना
टरै न या व्यथा अब तत्पर। लेहु बचाय हमैं यहि अवसर
अम्बरीष शरणाहि मुनि लहऊ। करौ विनय जो निज भल चहऊ
जो नृप चहैं तो लेइँ बचाई। नृप बिनु आन न कोउ सहाई
दो०। श्रीपति वानी जानि थे, बोले मुनि करि कोपि।
कीन्ह्यों मम छल हमसों, लेहु शाप शिर रोपि ॥
सो०। होइहै दशरथ नाम, अम्बरीष के वंश में।
लेहौ तिनके धाम, मनुज रूप अवतार तुम ॥
श्रीमति जन्म क्षेत्र ते होई। है अति विश्व भगवती सोई
सो कन्या मिथिला पति पाई। करिहैं तोहि योग्य वर लाई
होइ है तासों व्याह तुम्हारा। मुनि होइहै तुव सदन उजारा
कीन्ह कपट रजनीचर जैसे। नरयो हरकरि दर्प अनैसे
हरिहै निशिचर नारि तुम्हारी। विरह विकल तुम होउ दुखारी
खोजत ताहि फिरहु चहुँ ओरा। पैहौ नहिं तहँ शोध कठोरा

भयोविष्णु मन हर्ष अपारा । कीन्ह शाप मुनि अङ्गीकारा
सोउमुनिबहुरि अवधपुर आये । दीनबचन कहि विनय सुनाये
देखिभूप मुनि निपट दुखारी । लीन्ह मक्ष ते तिनहिं उबारी
दो०। भये बिगत जब कष्टते, मुनि मन कीन्ह बिचार।
कबहुँ करब बिवाह सुत, जबलों यह संसार॥
सो०। भयोराम अवतार, मुनिन शाप ते अवध में।
गोमाया ते पार, फँसि गे माया जाल में॥
बालमीकि मन परम हुलासा । करत कथा हरिगुण परकासा
विप्र एक त्रेतायुग माहीं । कौशिक नाम बिदित सब ठाहीं
विद्यवान गुण ज्ञान निधाना । गिरा गान में निपुण बखाना
याचना करि करत अहारा । हत्यो अधन पयसनक उदारा
पूजाध्यान विष्णु दिन राती । रहत भजन हरि के नित माती
सात शिष्य तिनके सँगमाहीं । गान शास्त्र में कोउ सम नाहीं
आठें यास विष्णु को नासा । बसत देहरी नीह के धामा
भोपद्माक्ष नाम द्विज कोई । रसिक प्रवीण धन दधन सोई
एक दिवस सुनि कौशिकगाना । भा प्रसन्न मन अति हरषाना
दो०। कौशिक को शिष्यन सहित, बोलि भवन निज लीन्ह।
भ्रातृ सिसहि द्विजन्हिं बहुत, द्रव्य सिन्धु सम दीन्ह॥
सो०। करि विचार मन साथ, निपट दुखारी देखिके।
तिन्हें अप्पन दियगाँध, नित प्रति भोजन के लिये॥
त्रिय पद्माक्ष सुशीलविनीता । नारिधर्म पालि व्रत पुनीता।
नाम सावित्री प्रभाह जासू । श्री सुगंध निर्मल तन तासू
पतिसिवाय दूसर नहिं देवा । मन क्रम बचन करति नित सेवा

पूजा हित कौशिक के दासा । लावहिं स्योंनि सदा सब सामा ॥
सावधान पति सुत निज सुख से । सुनहिं भजन कौशिक के मुख से ॥
गान में कौशिक निपुण कहावत । सुनि शोभा पै सी तहँ आवत ॥
विदित कलिङ्ग एक है देशा । गान सुनन तहँ आयु नरेशा ॥
कासनि बाद विष्णु यश गावो । तस उत्कर्ष हमार सुनावो ॥
सुनि कौशिक मनमहँ अति क्रोधे । कह नृप हौ नृप विष्णु विरोधे ॥
दो०। कहँ विष्णु लक्ष्मीपति, माया गुण गोपार ।
कहँ मनुज मति मूढ़ तू, अस्थित नहिं[illegible]सार ॥
सो०। करत प्रशंसा नाहिं, विष्णु छोड़ि मैं और की ।
चलत न या मग माहिं, अन्त काल पर आन पारि ॥
जब कौशिक अस बचन सुनाये । बार बार तब नृपति बोलाये ॥
कह कौशिक के आगे आवो । मम उदारता ताहि सुनावो ॥
लागे करन गान तब चारी । सो कौशिक के मन दुख भारी ॥
होइ अक्षुब्ध मनमहँ अनुमाना । कारिय यत्न स्वर धरे न काना ॥
शिष्यन सह कौशिक मन क्रोधे । निज निज कर्णरन्ध्र रोधे ॥
परी उन्हें धुनि यह धुनि ठानी । करें प्रतिज्ञा कौशिक ज्ञानी ॥
तान तरङ्ग गान बस छोड़े । शिर धुनि वृथा कर्णइन फोड़े ॥
भे अशक्त कछु चल न उपाई । एकरि काल तब रह्यो सुखाई ॥
बड़ हठ कीन्हो नृपति दुबारा । भयो शोक मन कीन्ह बिचारा ॥
दो०। छेदेउ रसना उलटिकै, निज निज परम सुजान ।
राख्यो शारद गान को, राख्यो धर्म प्रमान ॥
सो०। भे कोपित भूपाल, दीन छीनि धन सकल सब ।
कीन्ह दूर तत्काल, पचास आदिक देश ते ॥

वहँते निकसि उत्तर दिशि भयऊ ।	पहुँचे जहँ कुलाहल भयऊ
एक दिवस विधि के मन आवा ।	ब्रह्मलोक महँ तिनहिं बोलावा
प्रीति करन उनकी अभिलाषा ।	करि सन्मान उन्हें तहँ राखा
श्रीपति एक दिवस तहँ आये ।	सादर तिन्हें विष्णुपुर लाये
विष्णुलोक जब पहुँचे जाई ।	सुरन लीन्ह मन हर्ष बढ़ाई
विविध विधान भई पहुनाई ।	रहे तहाँ सब अति सुख पाई
बालमीकि मुनि कासुत बखानी ।	भरद्वाज मुनि सुनु सब बानी
तेहि समाज महँ मोहूँ रहऊँ ।	कौशिक गान सुनत तहँ भयऊँ
सुनत समाज नाद सुख गाथा ।	भये प्रसन्न रमा के नाथा

दो०। बोले बिहँसि विष्णु तब, ये सब परम बिरक्त ।
मनसा बाचा कर्मणा, हैं हमरे प्रिय भक्त ॥

सो०। देहो बहु सिरो पाव, दीजे इन्हें बिचारि के ।
रहे भजन मम भाव, नित प्रति कौतन और को ॥

कह कौशिक सो हरि सुखदाई ।	दीन्ह तुम्हें निज गुण अधिकाई
सेवक सहित हमारे लोका ।	रहौ सदा परिहरि सब शोका
रहे मालती पति के संगा ।	पति पद दर्शनि हो पति अंगा
बालमीकि बोले मृदु बानी ।	परम सुशील मधुर रस सानी
मध्य सभा सुर पुर इक बारा ।	राजत श्रीपति प्रथम उदारा
कहिये तहँ की कौन बड़ाई ।	जहँ राजत माधव सुखदाई
भूल्या सबु धरि शीश कि जोरी ।	खड़ी रमा आगे कर जोरी
लिये अरम्भ कौशिक तहँ गाना ।	भये सुखी सुर सब सुनि ताना
तुम्बुरु नाम एक गन्धर्वा ।	बैठि समाज जहाँ सुर सर्वा

दो०। गान तान कौ मान रच, गाये तान बितान ।

कीन्ह प्रशंसा बहुतबिधि, सुनिके श्री भगवान॥



सो०। सिन्धु सुता सुनि गान, भइ हर्षित अतिशय हिये।
दीन्ह सो अपने पानि, मणि मालिक बहु मोल के॥

समय सुनृत्य सखिन की आई । सिन्धु सुता तब दीन्ह रजाई
सभा मध्य जो होइँ पराये । सो नहिं बैठें जाइँ उठाये
सुनि अस बचन सभासद नाना । गये सबै निज निज अस्थाना
तहाँ लखिन नहिं कीन्ह बिचारा । कर गहि नारद तुम्हें निकारा
भई देव ऋषि अतिशय भीरा । करत बिचार भये मुनि धीरा
गान नारदा मो सम कोई । उपज क्षुद्रिते भया न होई
करौं कहा देवतन बड़ाई । सन्मुख मोरे सकैं न गाई
आगे बिष्णु सभा गन्धारी । गावें बैठे तुमैं निकारी॥
अति दुख ठाढ़ होन नहिं पावें । तहाँ बैठि तुम्बुरु धुनि गावें

दो०। श्रीसों कह्यो सु नारद, बिपुल रोष सन्ताप ।
कीन्ह अवज्ञा हमहिं जस, तस तुम लेवो शाप॥

सो०। धरणी धरि जस पाँव, डार्यो मोहिं घसीटि कै।
फेंकी अवनी माँव, उपजि राक्षसी उदरते ॥

राक्षसि उदर ले जन्म तुम्हारा । होय प्रकट यह शाप हमारा

बहुरि कह्योमुनि परम बिबेकी । जाव धरणि पर पुनि तुम फेंकी
जब अस बाक देव ऋषि बोले । व्योम रसातल दिग्गज डोले
लक्ष्मी सहित रमा को नाथा । बोले बचन जोरि युग हाथा
कह्यो रमा मुनि तुम तप धारी । शिर पर आज्ञा नाथ तुम्हारी
सुनो विनय इक मुनि परबीना । हैं हम तुम्हरे शरण अधीना
करु प्रति ज्ञान जो हम अनुसरहीं । घट शोणित अपने ऋषि भरहीं
पियेराक्षसी शोणित सोई । जन्म हमार ताहि सों होई
दया लागि मुनि कहा बहोरी । होइहै पूर मनोरथ तोरी

दो०। नारद सों विष्णुहि कह्यो, कीन्हो वृथा विषाद ।
जप तप योग सुदान ते, परम प्रिया मोहिं नाद ॥

सो०। मोरे भजन औगान, मोहिं प्यार ते प्राण सम ।
सत्य बचन मम मान, प्रथम वेद ते नाद वर ॥

गान ते मुनि कौशिकहि बड़ाई । है जग विदित सुरन मन भाई
तुम्बुरु गान सन्न मोहिं भयऊ । तुम कस हृदय क्रोध निर्मयऊ
जो होत्यो मुनि परम सुरागी । तौ कस करत सभा मम त्यागी
जो उत्कर्ष चह्हो मुनि राई । । सीखौ गान कहूं तुम जाई
गुरु बिनु विद्या कोउ न पावे । तैसे गुरु बिनु गान न आवे
चहौ जो सीखन मुनि तुम गाना । तो मैं तुम सों करत बखाना
विप्र अलोक विदित जग नामा । है गिरि उत्तर मानुष धामा
सीखौ जाय तहां हिय राखौ । सोवत भाग्य चहै उठ जागै
तब नारद मुनि करि अनुमाना । आये तुरत अलोक स्थाना

दो०। [illegible] राजा को ताल सों, गुञ्जत रह्यो स्थान।
परत हि [illegible] अवगाहि, उपजत उर सुखखान॥

सो०। खड़े सँमुख सजि साज, यक्ष अप्सरा गन्धरब।
निकट अलोक समाज, पऊँच ब्रह्ममुनि हर्षयुत॥

कहा अलोक कहां मुनि आये । कृपा कीन्ह अब हिं दर्श दिखाये
कहा पाय आज्ञा श्री नाथा । आये लिखन नारद सुख गाथा
सुनिये विनय कहौं कर जोरी । करौ आश पूरण द्विज मोरी
आपन हाल कहौं लौं कहिये । कहौ कथा निज सुनि सुख लहिये
या सम्पदा कवन विधि पाई । सो अलोक सब कहौ सुनाई
यक भूपति भुवनेश सुजाना । धर्म धुरीण सुनीति बखाना
तासु राज सब प्रजा सुखारी । सुनत कथा नृप धीर दुखारी
प्रान्त ग्राम अरु जिति शिर छाई । कहा ढिंढोरा नगर बजाई
भागवत भजन करै जनि कोई । विष्णु प्रशंसा कहौं न होई

सो०। करै विष्णु मख गान सब, सहै उग्रदण्ड हू भार।
जौन कान करिहैं नहीं, दैहौं नगर निकार॥

सो०। आयो सरिता तीर, विप्र एक हरिगुणगानिपुनत।
डासि वस्त्र शुचि धीर, लग्यो करन भागवत भजन॥

पाइ खबर नृप हूतिहि सदका । तुरत वहां ते ताहि भगाया
कछु दिन गये भूसुर तन त्यागा । गा सन्मुख यमराज अभागा
लख्यो न तब सन्मुख तहँ राजा । दीन्ह दिलासा तनु यम राजा
लागी तृषा क्षुधा अति भारी । जाय पुकारा यमराज पुकारी
का पराध अन्तक मैं कीन्हा । जो तनु मैं दियान्या दीन्हा
कह कृतान्त तुहि द्विज नहिं सतावा । तेहि कारण तनु भुजन न पावा
जैसे नगर ते द्विजहि निकारा । तैसे स्वर्ग ते लहिहैं हम टारा
जो तोहिं क्षुधा सतावै आई । करु भक्षण पल मुर्दा जाई

बहुतदिवसलौंयहिंतनरहिहै । क्षुधापियाससदातूसहिहै

दो०। येहिजम्बुकअन्धपिर, तूमतिमन्द गँवार ।

बहुत काल बीते पुनि, होइहै बेड़ा पार ॥

सो०। धरिहै मानुष रूप, बचैसत्य परमारा कारु ।

होइहै वही स्वरूप, साहित ज्ञान वैराग्यता ॥

कहा श्लोक मधुर मृदु बानी । सुनु आश्चर्यकथा मुनि ज्ञानी

है हमहीं भुवनेश महीपा । भयोउलूक आय यहि द्वीपा

धर्मराज जब निज पुर गाई । कीन्ह बात यहि गिरिपर आई

सरित मध्य मृतकर्ही बहता । लागि क्षुधा रोक्योतेहि गाता

पुनि नभ पद देख्यो द्विज चोही । भयेजासु बिनु कारण द्रोही

चढ़े बिसाल सुकुल धिर धारी । चकित भयो द्विज रूप निहारी

कह द्विज मलशानुकअतिखालू । जो रसैहो पाछे पछितालू

नहिं जानत तू मूढ़ बिहंगा । है भुवनेश नरेश को अंगा

यहेउ चरितसब आपन रोई । कहान मिटे लिखा विधि जोई

दो०। मम अपराध बिसारिके, दीन्हों आशिरवाद ।

होय जन्म मानुष तन, रहैं राग सब याद ॥

सो०। गयो द्विज सुर लोक, मोर मनोरथ पूर कर ।

रह्यो न एकौ शोक, मन वाञ्छित वर पाय के ॥

बन्दि चरण श्रीपति भगवाना । बालमीकि मुनि करत बखाना

विप्र चलोक अखिल गुणपावन । लग्यो नारदहिं राग सिखावन

लाजवन्त मुनि को द्विज देखी । मृदुल बचन तब कह्यो विशेखी

करेलाज गुरु सों शिष जोई । विद्यावान निपुण नहिं होई

गान सिखन को दह अनुरागा । भोजन दिव्य मधुर मृदु रागा

लाभ खर्च महँ होय उदारा । भाव भक्ति औ तोष अपारा
इन बातन ते लाज जो करई । अवशि जानिये काज न सरई
करै लाज औ है मन गावै । तासु राग कबहूं नहिं भावै।
गान खोलि सुख भार समाना । अकड़ तोलि तन करै जो गाना

दो०। भरे जो रागी स्वरन हँसि, डरिकै कम्पित गात।
  वृथा रागमाला करै, सुनि श्रोतै न सोहात॥

सो०। करिय न कबहूं गान, क्षुधा प्यास के आश वश।
  बरजत मुनि बिज्ञान, तिमिर निशा अरु शोक में॥

जब अलोक अस बचन सुनाये। भे प्रसन्न नारद मन भाये
कीन्ह गान प्रफुलित मन खोली। भये रागि सिख गुरू अमोली
जब सिख भये नाद सुख गाथा। दीन्ह अशीश हर्ष मुनि नाथा
बीते कल्प मान बिश्वासा । पैहौ तुम द्विजबर पुर बासा
श्रीपति मूरति महँ मिलि जैहौ। हरि सूरति महँ जाय समैहौ
चल नारद तुम्बुरु अस्थाना। जीतौं तेहि करि मन अभिमाना
पहुँचे मुनि तुम्बुरु आगारा। देख्यो कोतिक बिबि धप्रकार
बहुतक द्वार भीर नर नारी । सकल बिकल तन निपट दुखारी
कोउ बे शिर कोउ नयन बिहीना। कोउ घायल कोउ अति तन खीन

दो०। कोउ अबल कोउ पाद बिन, कोउ बिन मुख बिन नाक।
  भरे शोक जल दृगन कोउ, करि न सकत कोउ बाक॥

सो०। कह नारद गति देखि, सत्य कहो तुम कौन हौ।
  कहो सो कथा बिशेखि, केहि कारण तुम हो दुखित॥

राग रागिनी नाम हमारा । भयो भारु हम जीव पियारा
नारद नारद भये इक रागी । पढ़यो रागमाला अनुरागी

सिखि कै गान गर्व अधिकाई । बन्यो नवयोगी मूड़ मुड़ाई
सम स्वर ताल तान नहिं जानै । ऊँच नीच गति नहिं पहिंचानै
धुनि गिटकरी न तेहि कछु आवै। गान प्रभात को निशि मुख गावै
यहि कारण हम सबै बिहाला । फँसे आय दारुण दुख जाला



तुम्बुरु हमैं सुख जब मुख गावै । तब तो जीव मुये तन आवै
सुनिके नारद भये उदासा । गमने लज्जित श्रीपति पासा
करि रोदन निज कथा सुनाई । परे धरणि गहि पद लपटाई
दो०। बोले बचन विष्णु तब, सुनु नारद मुनिराज।
कछु दिन धरो धीर मन, करिहौं पूरण काज॥
सो०। होइहै पूरण काम, अरु विंशत द्वापर युगहि।
हौं बसुदेव के धाम, उदर देवकी जनम लै॥
है जो गान पर प्रेम अपारा । आयो तहँ तुम देव उदारा
तहँ हम तुम्हें सिखाउब नीके । होइहैं पूर मनोरथ जीके
तौलों मम करि वाक्य प्रमाना । जहँ तहँ सिखो जाय तुम गाना
सुनि नारद मुनि चल हर्षाई । वास रागिनी मनहिं समाई
गयने इन्द्रलोक यमलोका । वरुण लोक अरु अग्नि के लोका
रहैं जहाँ मुनिवर तहँ जाहीं । जेहि विधि रोंका पवन कहुँ नाहीं

गये जहाँ तहँ भो अति आदर । चले मिलन उठिकै सुर सादर
एक दिवस विधि लोक सिधाये । पहुँचि भवन विधिपरम सोहाये
ब्रह्मसमाज गान होइ रहेऊ । सुनि नारदहि हर्ष अति भयऊ

दो०। तहाँ संग रागीन के, नारद परम सुजान।
जस अतुराय सुर ह्यो मन, कीन्ह तहाँ तस गान॥

सो०। सुनि अज नारद गान, तन पुलकित मन हर्ष युत।
सकल सभा सुख मान, कीन्ह प्रशंसा विविध विधि॥

द्वापर युग लिय हरि अवतारा । भा सुख करण हरण महि भारा
सुमिरि वचन तब नारद आये । करि आदर प्रभु निकट बिठाये
जाम्बवती हरि की पटरानी । संग रागिनी विपुल सयानी
तिन्हें बोलि बोले भगवाना । सिखवहु नारद को कलगाना
जाम्बवती तब गान सिखावा । सुनि नारद अभिमत फल पावा
कृष्ण ताहि पुनि आप सिखाये । सिखि मुनि गान निपुण कहलाये
कह्यो विहँसि वसुदेव कुमारा । सुनो देव ऋषि वचन हमारा
करब न क्रोध कपट मुनि कबहूं । बैर भाव विसराउब अबहूं
याते होत सकल गुण हानी । करो प्रमाण वचन मुनि ज्ञानी

दो०। बोले विहँसि वचन पुनि, कृपासिन्धु सुख मूल ।
परिहरि ईर्षा बैर सब, जानौ म्वहिं अनुकूल ॥

सो०। तुम अरु तुम्बुर साथ, करौ गान नित हर्ष मन ।
रहौ तहाँ मुनि नाथ, शुभ चिन्तक मन्त्री सुखद॥

वालमीकि मुनि कथा रसाला । कहत सुनत विनशत भ्रमजाला
भयो प्रकट जग ऋषि वरदाना । यातुधान रावण बलवाना
विभव धनद लखि भयो दुखारी । कीन्हेसि वर्ष सहस तप भारी

भे प्रसन्न तब मन चतुरानन । कहा माँगु बर पुत्र दशानन
कौन हेतु दारुण दुख तोही । सो सब व्यथा सुनावो मोही
सुनि बिधि गिरा जोरि युग हाथा । बोला बिहँसि वचन दशमाथा
होइ न कबहूं मृत्यु हमारी । तेहि कारण कीन्ह्यों तप भारी
कह बिरञ्चि सब जग मम रांचा । काल कौर सों कोउ न बाँचा
है यह बात अपन कर नाहीं । कहौं सत्य समझहु मन माहीं

दो०। कह बिधि सों रावण बहुरि, करौ सिद्ध इक बाच।
यक्ष दैत्य गन्धर्व सुर, अरु अप्सरा पिशाच ॥

सो०। लगे नहु तल आँच, मेरे प्रिय यहि जीव को।
करौ परण यह साँच, दया नाथ आरति हरण॥

एक कठिन प्रण और बिधाता । सुनहु प्रभू दे चित मम बाता
सुता सों जब लो होंन दुराशा । तबलौं होइ मोर नहिं नाशा
एवमस्तु बोले जगदीशा । गयो सुरा सद इक दशशीशा
धनद सुरेश दैत्य सुर शेशा । धरण यक्ष गन्धर्व नरेशा
रवि शशि गगन देव दिगपाला । पावक पवन मेघ यम काला
जीति तिन्हैं दारुण दुख दीन्हा । हठ सबही अपने बश कीन्हा
पुनि दण्डक बनगा अभिमानी । सन्त अधिन सों कह हठ बानी
देहु दण्ड मोहिं आनि सुरारी । नहिं मारिहौं तुमसों हठ रारी
भये क्रोध बश मुनि तप धारी । लगे करन सब शोच बिचारी

दो०। बोले क्रोधित सब ऋषि, अति दृग नीरज रास ।
है यक शोणित अङ्ग सों और न कछु हम पास॥

सो०। भयो सरुष क्रव्याद, कहा बाक अभिमान युत ।
देहु सोई छुट जात, जानि भलाई आपनी ॥

क्रोध अनल से गल जिमि पाला । चला खोज घट के दश भाला
बालमीकि मुनि परम प्रवीना । लगे कहन यक कथा नवीना
विप्र एक गिरतल सद नामा । हरिपद भक्त निपुण गुणधामा
करत योग तप लै तिय साथा । उरभरोस धरि लक्ष्मी नाथा
दा ऋषि लाख बसी मन ताके । होइ सुता लक्ष्मी सम जाके
भोर साँझ पय घटहिं भराई । करत अवाहन लक्ष्मी लाई
पुनि निज पतिनी काहिं पियावे । आशा प्रिया अरधङ्ग कहावे
सो घट रावण लीन्ह छोड़ाई । आवा निकट अवधि दुखदाई
घट शोणित सों ऋषिन भरदीन्हा । लैकर गमन लङ्क को कीन्हा



दो० । दीन्ह जाय मन्दोदरीहि, कही बहुरि मुसुकाय ।
है घट भरा हलाहल, रखौ यतन कराय ॥

सो० । चला सो पुनि रणधीर, विजय लड़ाई के लिये ।
परे जे सन्मुख बीर, जीति तिन्हैं निज बश किये ॥

सर्प भूमि जे अदमन रावे । जीति सबै निज बश करि राखे
काम्पित भूमि अकाश पताला । जीति सुर असुर सब्यो शाला
कन्या देव नाग सहि वाला । लयो पकड़ि बरबस दशभाला
भरि जो शिर तोहि ऋषि लिलासा । तिन संग कीन्हे विशेग विलासा

जब या खबरि मंदोदरि पाई । डाह बिबश शिर धूर उड़ाई
कह बिष खाय मरब भल नीको । सवति डाह नहिं जीवब जीको
जानि गरल मय सुता सयानी । कीन्ह पान घट शोणित आनी
लग्यो मनोरथ तरु फल सोई । जाते हत निशचर कुल होई
एकतो घयलक्ष्मी आवाहन । दूजे शोणित ऋषिन तन पावन

सो० । करत पान मन्दोदरी, कीन्ह गर्भ परकास ।
भारहरण क्षिति लाक्षिलब, लीन्ह उरसहँ बास ॥

सो० । हती मूर्ति ज्यों ज्वाल, उठत चमकत नव वह्नि सम ।
पासन सक राखि बाल, भूल्यो आँचन सहि सके ॥

जानि मंदोदरि निज अवधाना । पति भय हृदय तासु घबड़ाना
तुरत बिमान बिचित्र मँगाई । होइ आरूढ़ कुरुक्षेत्र सिधाई
तहाँ जाय अवधान गिराई । शरवेसि तहिं महि धूरि छिपाई
भयो न जल जग सुनि तेहि काला । बिन घन रस सब स्रष्टि बिहाला
क्षुधा शोक वश सब जिव भारी । बिना अशन सब मरें दुखारी
कीन्ह शोच मन तिरजत राऊ । होय सलिल सो करिय उपाऊ
बुद्धि सचिव बहु दूत पठाये । देश देश के गणक बोलाये
करि सन्मान निकट बैठारे । मृदु मञ्जुल नृप बचन उचारे
जानि बिकल जग वाहों बिचारी । बर्षहिं जलद बेग सुख कारी

दो० । गुरु गण एवो कारज सों, बोल बिप्र समुदाय ।
देहु वारि आशिष अबै, करिये एक उपाय ॥

सो० । लांगल रजत बनाय, खनिये नृप कुरुक्षेत्र में ।
तहँ महि सोनौ जाय, बरस वारि संशय नहीं ॥

बचन द्विजन के सुनि अवनीशा । ध्यार बान्ह्यो पद शीशा

रानीसहित हर्ष उर आनी ।	सुमिरि गजानन शम्भु भवानी
कीन्ह पयान तुरत नर नाहा ।	चल्यो सुमारग ज्यों परवाहा
नृपति सोई जहँ प्रजा सुखारी ।	सहै कष्ट तिनके हित भारी
अस विचार करि तिरहुत राई ।	गये कुरुक्षेत्र क्षेत्र सुखदाई
तहँ कर धरि हल नृप औ रानी ।	लागे जोतन महि हित पानी
लगत अनी हल अवनिकिशोरी ।	भई प्रकट भग सो घट फोरी
देखी जनक प्रीति उर छाई ।	लीन्ह तुरत तेहि गोद उठाई
हर्ष सहित नृप घर लै गयऊ ।	जानि कन्या सम पोषित भयऊ



दो०। सिन्धुसुता श्री लक्ष्मी, पावन अमल अनूप ।
धर्यो जानकी नाम शुभ, जगतशिरोमणि भूप ॥

सो०। भो पुनीत नृप गेह, करत प्रवेशहि रमाके ।
भाग विभव वैदेह, शारद शेष न कहि सकें ॥

नमो नमो श्रीपति रघुनायक ।	अग जग नाथ प्रणत सुखदायक
करो अनुग्रह प्रभु सुर रञ्जन ।	विश्वभरण असुरन मद गञ्जन
बालमीकि मुनि मन हर्षाई ।	कहत कथा अद्भुत सुखदाई
जब रावण सीता लै गयऊ ।	बिरह दुखित रघुनायक भयऊ
खोजत बिपिन फिरत रघुनाथा ।	धनुष बाण कर लक्ष्मण साथा

पुगुल अतुलबलछबिसुखसीवाँ । गे गिरि निकट जहाँ सुग्रीवाँ
मिल्यो तहाँ अञ्जनी कुमारा । पर्‌यो चरण तन पुलकि अपारा
करि अस्तुति बहु बिनय सुनाई । तुम ईश्वर त्रिभुवन सुख दाई
नभ भूधर नहिं सरित पताला । निर्म्यो सब तुम दीन दयाला

छं० । जयजय रघुनन्दन असुरनगञ्जन जनरञ्जन श्रीकन्ता।
सुरमुनि ध्यावत ध्यान लगावत पावत आदि न अन्ता ॥
जयजय किरपाला दीनदयाला प्रणतपाल भगवन्ता।
सर्वज्ञ मुकुन्दा परमानन्दा धर्म प्रद वेद भनन्ता ॥
कलिकलुषविनासी सब उरबासी शोभानिधि सुखमूला।
त्रिभुवन नाथा करो सनाथा होउ मोपर अनुकूला ॥

दो० । कर्म धर्म के दायक, तुम प्रभु कृपा निधान ।
हौ चर अचर के नायक, दीनबन्धु भगवान ॥

सो० । तुम त्रैलोकी नाथ, हौ पालक त्रैलोक्य के ।
नावत सुर मुनि माथ, चरण बन्दि कर जोरिके ॥

जय सच्चिदानन्द परधामा । अलख निरञ्जन अगुण अनामा
कमला कन्त अनन्त मुकुन्दा । जलशायन भगवन्त गोबिन्दा
पार ब्रह्म अच्युत अबिनासी । अजित अनादि सर्व घट बासी
परमात्मा परमेश्वर स्वामी । त्रिभुवन पति उर अन्तरयामी
अजय अखण्ड अरूप अमाया । आदि अन्त तव निगम न पाया
भक्त बछल सन्तन सुखरासी । श्रीपति पुर बैकुण्ठ निवासी
नरतन धरि महि भार उतारन । फिरो बिपिन सुरकाज सँवारन
दयावन्त दाया करु मोपर । जानिय मोहिं नाथ निज किंकर
देउ भक्ति निज पद रघुनाथा । करिय सनाथ राखि पुनि साथा

छं० । आरति हरण शरण सुखदायक कृपासिन्धु भगवाना।
सुरमुनि ध्यावत मर्म न पावत आदि मध्य अवसाना॥
सन्तन हितकारी भव भयहारी गावत वेद पुराना।
किरपा प्रभु कीजे विनय सुनीजे दीजे भक्ति वरदाना॥

दो०। मारुत सुत बिनती सुनत, बिहँसि कह्यो भगवान।
हौं मैं तेरी भक्ति ते, अति प्रसन्न हनुमान॥

सो०। कर अस्तुति अस कोय, जैसी तुम निज मुख कियो।
ताहि सदा सुख होय, सो मेरे हिय हौं तासों मगन॥

छं०। मन कर्म बच अनुराग युत जो नारि नर मोहिं ध्यावहीं।
बिन योग जप तप दान संध्य सबास सम पुरपावहीं॥
सुनि वाक्य श्रीपति को पवन सुत पुलकितन अति सुख लहे।
करिके विनय बहु भाँति पुनि पुनि हर्षि पद पङ्कज गहे॥
जानि प्रभु निज दास तेहि गहि बाँह लीन्ह उठायके।
करि तोष सुर नर नाह बहु बिधि मिल्यो कण्ठ लगायके॥

दो०। राम नाम अमोल है, लगै न कौर कछु दाम।
ते नर मूढ़ मन्द मति, जे न भजैं श्री राम॥

सो०। हर्ष न हृदय समाय, भये मगन मन पवन सुत।
सो सुख वरणि न जाय, लालमनी किमि कहि सकै॥

बालमीकि मन आनँद भारी। कहत कथा हरि गुण विस्तारी॥
अवनिसुता पति राम कृपाला। कहा पवनसुत सों सब हाला॥
कही कथा सब अवध बखानी। दीन्ह राम बन जेहि बिधि रानी॥
गयहरि सिय आराम मझारी। खोजत ताहि फिरत बन भारी॥
तब मारुत सुत भक्ति दृढ़ाई। सकल कथा सुग्रीव सुनाई॥

बालि के त्रास रहत गिरि ऊपर	करो कृपा तापर करुणाकार
कह सुग्रीव जो देखन पाऊँ	तासु विपति मैं ताहि मिटाऊँ
हनू राम लक्ष्मण दोउ भाई	गयो ले गिरि पर कन्ध चढ़ाई
मिलि सुग्रीवहि हृदय लगाई	बालि वधन की आस बनाई

दो० । जानि दास प्रभु आपन, कृपासिन्धु रघुराज ।
बालि मारि सुग्रीवहीं, दीन्ह सिंहासन राज ॥

सो० । पुनि सीता की खोज, चले तुरत बन्दर कटक ।
उर धरि चरण सरोज, सिन्धु पार गो पवन सुत ॥

यहाँ सेन युत श्री रघुबीरा	पहुँचे जाय सिन्धु के तीरा
फिरे पवन सुत लङ्क जराई	सिन्धु निकट सेना सब पाई
कहा सिन्धु सों लक्ष्मण जाई	करो यत्न उतरै कटकाई
दीन्ह न उत्तर जब बारीशा	क्रोधवन्त तब भयो अधीशा
परे कूदि प्रभु सिन्धु मँझारी	उठी अनल तन तारि भारी
भयो बारि बारिधि जर छारा	कम्प्यो कम्पित गात अपारा
मच्यो कुलाहल जिय अकुलाने	जीव जन्तु ले जीव पराने



जानि प्रलय सब भये निराशा	कम्प्यो रवि शशि भि [illegible]
तब देवन प्रभु पद शिर नाई	करि अस्तुति बहु बिनय सुनाई

दो०। नाथ तुम्हारी शरण तजि, हमें न और कि आस।
करौ अनुग्रह सिन्धु पर, पावैं सकल सुपास॥
सो०। शरण सुखद प्रभु जान, आये हम सब देवता।
करु रक्षा भगवान, त्राहि त्राहि आरति हरण॥
बोले वचन नीति श्रुत रघुबर। कीन्ह काम लक्ष्मण नहिं सुन्दर॥
नहीं उचित काहू को सतावब। बरियाई निज बल दिखरावब॥
अस कहि कृपासिन्धु अरगाये। बहुरि दृगन ते आँसु बहाये॥
भरा बहोरि सिन्धु जल खारा। करत कलोल दुकूल अपारा॥
लखि अनुकूल राम सुर हरखे। करि उत्कर्ष सुमन बहु बरखे॥
बँध्यो सेतु पुनि अम्बुधि ऊपर। भये प्रसन्न देखि करुणाकर॥
कह्यो दास यह भूमि सोहावन। करिहौं इहाँ शंभु आवाहन॥
बनी तहाँ रामेश्वर मूरति। सुदिन सुतिथि ग्रह साधि मुहूरति॥
धूप दीप नैवेद्य पुंगीफल। पान तँदुल चन्दन तुलसीदल॥
दो०। मृगमद कुमकुम फूल फल, औ सब तीरथ नीर।
पूजा हितहि मँगाये, सीतापति रघुबीर॥
सो०। दिय आज्ञा भगवान, लाउ खोजि द्विज वेदधर।
चारौ दिशा प्रधान, ढूँढ़ि फिरे पायो नहीं॥
कहा सचिव सुन दीनदयाला। है लायक अतु द्विज दशभाला॥
नहिं रावण सम कोउ द्विज आना। विप्र ज्योतिषी वेद पुराना॥
चौदह विद्या करतल जाके। करै कौन द्विज सर बरि ताके॥
नहिं पण्डित ऐसो जग कोई। करै यज्ञ वा सन्मुख जोई॥
कह्यो बहोरि कोऊ मंत्रीवर। है अचरज आवब दशकन्धर॥
कटक माँझ हम कैसे ऐहैं। बैर मान सन्देह बढ़ै हैं॥

बहुरि सचिव पुनि मन अनुरागे । बोले बचन सत्य रस पागे
जो रावण आज्ञा प्रभु पैहै । जानि कर्म शुभ तुरत सो ऐहै
परम बिबेकी बिद्या धारी । चारो बेद शास्त्र अधिकारी

दो०। करै खबर दशशीश को, पठवो दूत तहँ जाय।
लावै ताहि बोलाय कै, करै कृत्य शिव आय॥

सो०। प्रभु रजाय धरि शीश, चला दूत शिर नायकै ।
गयो जहाँ दशशीश, लैसँदेश रघुकुलतिलक॥

कहा संदेश रावणहिं जाई । सकल कथा उपहार सुनाई
है सामान कृत्य यहँ ढेरी । चलिये आप आपकी देरी
बिहँसा सुनत दूत मुखबानी । कहा कौन असमति अनुमानी
नहिं कारण कछु मोहिं बुलाई । आवै जनक सुता सँगलाई
समझे मनहिं जानकी नाथा । गँठ बन्धन को लय है साथा
शुभ कारज कृत जे जगमाहीं । बिनपति पद दर्शन शुभ नाहीं
देखन चहत सियहि रघुराई । हैं परबश बश कछु न बसाई
ऐसि तर्कना मन उपजाई । कीन्ह बहाना बात बनाई
पुनि कछु बेद नीति उर आनी । कीन्ह तर्क सब मनते हानी

दो०। है जो तुम्हारे यही मन, कहा रावण कुशलात ।
छोड़ँ समाज के शामिल, हौं यद्यपि आपात॥

सो०। अस कहि निशिचरनाथ, कीन्हागमन बिमानचढ़ि।
लैकै जानकि साथ, कटक माँझ प्रभु के गयो ॥

गयो राम लक्ष्मण के आगे । बैर कपट छल भ्रम भय त्यागे
भयो सभा मन अचरजभारी । निकट राम रावणहिं निहारी
करि बारता मञ्जु मृदु बानी । कीन्ह आरम्भ यज्ञ हिज ज्ञानी

निकट राम सों जनक किशोरी । निज कर गाँठ राम सँग जोरी
लै कर जल मूरति हनवाई । मलयज अक्षत फूल चढ़ाई
कीन्ह आरती धूप जराई । धूप बास महि मराइल छाई
फल तुलसी फल भोग मिठाई । करि अर्पण नैवेद्य लगाई
पुनि शङ्ख जल लै अँचवाया । पान सुँगीफल अर्पि चढ़ावा
स्तुति श्लोक बहुत कर जापा । लिङ्ग रामेश्वर पुनि अस्थापा

दो० । हर्षि विबुध बर्षें सुमन, बाजें गगन निशान ।
देव वधू निरखैं विरसि, गावैं मङ्गल गान ॥

सो० । द्विजवर परम सुजान, अस समुझ आशिष दियो ।
रहो सुखी भगवान, जय जनक त्रिभुवन पती ॥

सुफल काज सब होयँ तुम्हारे । जग जीवन जीवन रखवारे
होइ है अचल राज सुखरासी । पावौ कामना औ रिपु नासी
सुनि अशीश सब कटक समाजू । मन पुलकित हर्षे रघुराजू
कह द्विज बड़ विह्वल कछु बानी । जिन समझें कि मिकरौं परवानी
तजि लज्जा मर्याद जानकी । है सन्मुख जग जननि जानकी
आयसु देत न करब संदेहू । रखिये पर्या वेद मति सहू
कह्यो राम मृदु मञ्जुल बानी । हठ हमारि जो तुम हठ ठानी
बिन हठ छूटे न तोर उधारा । मिथ्या हो सब पर्या हमारा
हर्ष सहित तब रावण लङ्का । गयो बहुरि लै सीतहि लङ्का

दो० । सेन सहित रघुवंशमणि, उतरे सागर पार ।
कीन्ह बधन रावणहि कर, निजशर अधम उधार ॥

सो० । दीन्ह विभीषण राज, लङ्क सहित कर रागायतन ।
फिरे अवध रघुराज, लै कै जानकि सेन सुत ॥

बन्दि चरण अम्बुज अघ हारी । कमलापति पय सिन्धु बिहारी
बालमीकि मुनि हर्ष बढ़ाई । कहत विभव सीता सुखदाई
जीति लङ्क जब श्री रघुराई । फिरे अवध सुखरह जग छाई
देव ऋषीश्वर दर्शन हेतू । आये सब जहँ रघुकुल केतू
श्री रघुनाथ हर्ष बड़ कीन्हा । करि दण्डवत शुभासन दीन्हा
ऋषिन प्रशंसिक बचन उचारे । तुम ईश्वर सब जग रखवारे
अति प्रचण्ड रावण बरियारा । सुरहित लागि ताहि रण मारा
शोक दुसह दारुण भय दावा । काल फांसते हमें छोड़ावा
सुनत राम निज बल प्रभुताई । बिहँसे तन आई अँगड़ाई

दो०। सुनि अनुमोदन ऋषिन मुख, सिया दीन्ह मुसकाय।
मारि बिप्र कुल रावणहि, कौन बड़ापन आय॥

सो०। नहिं उत्कर्ष कि बात, ऐसे लघुता काम की।
कह सब ठकुर सोहात, का मनुसाई राम की॥

सुनि बाणी सिय सुर सकुचाने । भये चकित मन माहिं सकाने
कारण कौन सिया मुसकानी । राम प्रशंसा सिय न सोहानी
अवनि सुता तब हँसि के कहेउ । जन्म हमार अवनि ते भयेऊ
झूठ बचन कबहूं नहिं बोलें । बिनु कारज मुख कतहुँ न खोलें
जब मैं अपने पितु घर बासा । करत हती मन परम हुलासा
तहँ क चरित मैं कहौं बखानी । सुनो सकल सुर मुनि बिज्ञानी
आवा जनक निकट द्विज एकी । धर्म धर्म गुण निपुण बिबेकी
कहा तुमें नृप देय निवासू । करौ तहां बर्षा ऋतु बासू
आपद काल मों होउ सहाई । तुम्हें उचित नृप द्विज सेवकाई

दो०। दीन्ह बास नृप निज भवन, पायो द्विज बिश्राम।

पठवा देइ रजाय मोहिं, नित प्रति सेवाकाम॥
सो०। पायो सुख सामान, द्विज निज आसन डासिके।
लग्यो करन जप ध्यान, उपदा जोरि मैं लावती॥
नित पूजन हित चौका देऊँ । पुष्प सुगन्धित चुनि धरि देऊँ
करि पूजा नैवेद्य जो पावैं । कथा विचित्र अनूप सुनावैं
कहा एक दिन विप्र पुनीता । अचरज एक सुनो तुम सीता
सप्त सिन्धु जे परगट अहई । तामें एक उदधि दधि कहई
ताके मार बसत यक द्वीपा । विदित नाम तेहि ह्वांकर दीपा
विपिन सघन अति उतँग पहारा । तहँ ऋषि मुनि के ग्राम अपारा
बसत उहाँ इक नगर अनूपा । तेहि नगरी महँ राघरा भूपा
दनुज प्रचराड मनुष्य अहारी । करिसकत बधकोउ धनुधारी
बहुरि जानकी सब दिशि हेरी । कहति कथा उत्पाति तिन केरी
दो०। जहाँ करत पुलस्त्य मुनि, तप नित धरि हरि ध्यान।
कन्या नृप तृणबिंद नृपति की, आवै तेहि अस्थान॥
सो०। गाय बजाय निशान, और सखिन को साथ लै ।
होय जाय जप हान, परत भनक स्वर के श्रवण॥
मुनि करि कोप दीन्ह तब शापा । जो आवै यहि ठाउँ मम जापा
रहै गर्भ बिन मनमथ पाये । कहि अस मुनि पुनि ध्यान लगाये
गइ जब अपने भवन कुमारी । गर्भ पिता लखि दुख भारी
कीन्ह बिचार बहुरि मनमाहीं । कहा दोष कन्यै कछु नाहीं
सो कन्या पुलस्त्य कहँ दीन्हीं । हर्ष सहित मुनि कर गहि लीन्हीं
भे बिश्रवा सुनहु सुत ताके । कर्म धर्म गुण सुन्दर जाके
भरद्वाज मुनि शुभ गति देखी । दिय कन्या निज हर्ष बिशेखी

तासों भे कुबेर दातारा । धर्म धुरीरा धनेश उदारा
लखिके तास अजभये सुखारी । कह्यो माँगु वर पुत्र बिचारी
दो०। कह कुबेर करजोरि कर, सुनिये अग जगनाथ।
देहु एक वर यह सदा, रहै लक्ष्मी हाथ ॥
सो०। तब बिरंचि शुभ बानि, एव मस्तु कहि हर्षयुत।
दीह्यो बज्ञरि बिमान, चढ़ि कुबेर गे पितु सदन ॥
कह अभिलाष एक मन माहीं । धनकी मोहिं इच्छा कछु नाहीं
नहिं अस्थान नहीं कहुँ ग्रामा । करौं जाय मैं तहँ बिश्रामा
कह त्रिकूट पर्वत के ऊपर । गढ़ अटूट लङ्का बस तापर
बिशुकर्मा निज हाथ बनाई । सुरन निवास कीन्ह तहँ जाई
भये दनुज जग बिकट कुचाली । मालवन्त मालि य सुमाली
कीन्ह उपद्रव तीनौं भाई । लीन्ह सुरन ते लङ्क छोड़ाई
भयो बिश्व उर दारुरा कोपा । मारि तिनहिं रण कीन्ह अलोपा
सो तुम करौ जाय तहँ बासू । सुखसम्पति युत भोगबिलासू
भे कुबेर पितु आज्ञा पाई । रहे जाय पुनि लङ्क बसाई
दो०। करत संयत श्री बिष्णु के, बच्यो सुमाली भाग।
बास कुबेर सुनत तेहि, बढ़त हृदय दुख लाग ॥
सो०। अस कछु करिय उपाय, लीजै धनद ते छीन गृह।
मन अति तर्क बढ़ाय, लगे करन रचना सोई॥
नाम केकसी ताकै कन्या । कीन्ह बिश्रवा की सो धन्या
जाते जा सुत उत्पति होई । होइ है सम कुबेर के सोई
कह कन्या सों सुनि हर्षाई । का अभिलाष सो कहो बुझाई
बोली केकशी तब कर जोरे । चहै बंश तुम से मुनि मोरे

कह कुसमय माँगा बरदाना । होइहै सुत राक्षस बलवाना
बोलि केकशी दुख युत बानी । है अचरज मुनि तुम जो बखानी
तुम पति मुनि मैं तुम्हरी जोई । तिनसों उतपति राक्षस होई
कह मुनि जो सुत पाछे होई । भक्त शिरोमणि हरि का सोई
असकहिहर्षत्रियहिगहिलयऊ । करिबिलासपुनिरतितेहि दयऊ
दो०। आदि जन्म रावण पुनि, कुम्भ करण बलवन्त।
शूर्पणखा कन्या भई, बहुरि बिभीषण सन्त॥
सो०। श्रवणनयन भुजबीस, दशआनन रावण सुभट।
कीन्ह अवनिहति खीस, जगपरितापी सुरन रिपु॥
एक दिवस की सुनु यह बाता । गये कुबेर भवन सँग माता
दीन्ह केकसी ताहि कलेषी । है कुबेर तुम भ्रात बिशेषी
बिभव कुबेर दीख जब रावन । दाह अनल उपजी तन तावन
कह लैहौं मोहूं बरदाना । तप बल बिभव कुबेर समाना
कहि अस चला सहित दोउ भाई । निकट गोकरणनाथ के जाई
कीन्ह तपस्या तीनों भ्राता । कथा समस्त जगत बिख्याता
लहि बरदान बहुरि जब आवा । बचन सुमाली ताहि सुनावा
है यह लङ्का पुरी हमारी । दीन्ह देवतन हमैं निकारी
लेहु कुबेर सों बेगि छोड़ाई । करौ तात कोइ यत्न उपाई
दो०। बिहँसि कहा रावण तब, है कुबेर मम भ्रात।
उचित मोहिं तासों नहीं, करब बैर उतपात॥
सो०। कह कश्यप के बंश, सुरऔअसुरहु आदि सब।
बैर भाव को इंश, एक एक को मारहीं॥
बहुरि सुमाली तर्क बढ़ाई । कहा बिनय करि लेहु बड़ाई

लेइ कटक रावण तहँ धावा । पुनि पाछे ते दूत पठावा
जाय कह्यो रावण प्रभुताई । देहु लंक की लेहु लड़ाई
तब कुबेर मन कीन्ह बिचारा । है यह मोल सु भ्रात हमारा
गढ़ लङ्का तब त्यागनकीन्हा । जाकैलास बास तहँ लीन्हा
पुनि रावण पितु आज्ञामानी । कीन्ह जाय लङ्का रजधानी
त्याग अरिपिन ऋषिवराउआरा । त्यहिं हित राम समरतेहिंमारा
सुनो चरित उद्भव महिरावण । जन्म्यो केकासि यक संग रावण
भयो बली अतिकहिनहिंजाई । सराङ्गराअकड़ ततनन समाई

सो०। खेलत खेल बालपन, रवि शशि गेंद समान ।
लापत खैंचे गगन ते, सुरपति रहत सकान ॥

सो०। ऐसो भट बलवान, दीन्ह छिलाई गगन को ।
सुर जहँ तहाँ परान, भये बिकल सब देवता ॥

बाँधि सुरन रजु त्रास दिखावै । पकड़ि पाँवपुनिमहिं घसिलावै
आवा इन्द्रलोक इकबारा । सब देवन को जाय निकारा
इन्द्रासन पर बैठ्यो जाई । राक्षस दैत्य बुलाय बसाई
भये देव सब निपट निरासा । गिरि कन्दर महँलीन्हनिवासा
कहति सियाम्रदुबचनबहोरी । बैठि सभा सम्मुख ऋषिओरी
का बपुरा दश शीशक रावन । बध्यो राम लागयो यश गावन
सहस शीश कोहै महिरावन । सुर द्वेषी ऋषि मनुज सतावन
ताको बधन करै जो कोई । पावन सुयश पुरान सुगहोई
सुनी राम जब सिय मुखबानी । भये सहमि मन भई गलानी

सो०। भये सरुष श्री राम तब, कह्यो सुमन्त्र बोलाय ।
चारु इकठौरी अवध दल, हय गय साजबनाय ॥

सो०। पठवा लङ्क सँदेश, आव बिभीषण सेन युत।
चलैं संग अवधेश, रिपु दल जीतन के लिये॥

पठवा पम्पापुर यक धावन। चमू सहित सुग्रीवहिं लावन॥
लङ्कनपति सुग्रीव कपीशा। आय राम पद नाये शीशा॥
पाय रजाय सु आशा कारी। निज निज दल सब साज सँवारी॥
पहिरि झिलमिली धरि शिरखोदा। भे सुभटन के मन अति मोदा॥
बाँधि धनुष तोमर किरपाना। गदा गुर्ज मुद्गर धरि नाना॥
नाय माथ ठाढ़े प्रभु आगे। निरखि सुभट प्रभु मन अनुरागे॥
चढ़े बिमान जानकी नाथा। लै दल कपि निशिचर सिप साथा॥
करि पयान श्रीपति रघुराई। पहुँचे देश शत्रु के जाई॥
खबरि जबहिं माहिरावण पाई। कीन्ह वाहिनी अवध चढ़ाई॥

दो०। लाग कथन मनहीं मन, का बापुरा पुमान।
करै जो सन्मुख मोरे, समर भूमि कल्यान॥

सो०। काह बिधि सकै वार, भे प्रसन्न निश्चर सबै।
घर बैठे आहार, बिन श्रम दीन्ह्यो लाय कै॥

कहा बहोरि तर्क उपराजी। कीश भालु मानुष हम खाजी॥
नहिं कछु मोहिं अवश्य प्रताना। चाहिय सहायक धनु अरु बाना॥
अस कहि सन्मुख रण के आवा। पवन बाण तहँ सपदि चलावा॥
गयो कटक जहँ तहँ रण माहीं। जिमि मारुत सँग मेघ उड़ाहीं॥
भूप बिभीषण सहित सहाई। गिरयो तुरत लंका पर जाई॥
कटक भालु कपि रण त उड़ाई। गिर पम्पापुर मनहिं लजाई॥
ध्वजिनी अवध अवधपुर गयऊ। सकल सुभट मनहीं मन कहऊ॥
जो रण आनि करहोत लड़ाई। लड़ते हमहूं बलहिं दिखाई॥

मरते ताहि कृपाण उपाटी । लेते शिर कराटककर काटी
दो०। करत प्रहार न पलभर, वह धोखे का तीर।
तोरण ताहि बधनकर, लेते जग यशबीर॥
सो०। कीन्ह जो छल सों घात, नीति रीति सों दूर है।
है अनीति की बात, दै धोखा लड़िबो समर॥
लख्यो राम जब शत्रु कुचाली। भयो क्रोध आँखें भई लाली
दीन्ह रजाय अवध कटकाई। चलें लड़ें फिरि साज बनाई
सैन सहित पुनि नृपति बिभीखन। आये अवध पाय बर सीखन
लै दल कपि सुग्रीव कपिन्द्रा। आटे अवध जहँ रघुकुलचन्द्रा
जामवन्त निज सेन बटोरी। आय राम सन्मुख कर जोरी
करि बिचार बहुरिऊ रघुराई। चार अनी कटकाइ बनाई
+हरबल भरथहिं कीन्ह शत्रुहरण। अनीपतिन पर भे पुनि लक्ष्मण
बाजें बिपुल निशान सुभाऊ। सुनि सुभटन मन उपजत चाऊ
चला कटक जैसे जल धारा। उतरा जाय सिन्धु के पारा
दो०। कहत सूरमा परसपर, लड़िये अब दिल खोल।
करिये चोट शत्रु पर, चहुँ दिशि ते करि ढोल॥
सो०। धरिय सँभरि कै पाँव, हिलन हिलाये कोटि विधि।
खेलिय बधिबे दाँव, समर भूमि वह शत्रु ते॥
महिरावण करि क्रोध अपारा। पुनि रण सन्मुख तीर पँवारा
लागत झरक तीर कटकाई। कोसों उड़े न धूरि दिखाई
गे निज भवन कपीश बिभीषन। अवध भरथ लक्ष्मण शत्रूहन
जामवन्त नल नील समेता। गे उड़ाय सब अपन निकेता
समर भूमि कोउ रहा न ठाढ़ा। अतिशय रोष राम उर बाढ़ा

+अगुवा देनेवाला।

कारिहौं बधन अवधिमें वोही । बहुत बचा अबलौं सुरद्रोही
बहुरि राम की पाय रजाई । आवा बहुरि कटक समुदाई
आ पहुँचे महि रावण देशू । बाँधि कोट रण कीन्ह प्रवेशू
होनहार नहिं मिटै मिटाये । कविकोविद निगमागम गाये

दो० । जबै राम मन कोप करि, खैंचो विशिख इष्वास ।
कांपे दिग्गज महीधर, क्षिति पताल आकास ॥

सो० । भयो कोलाहल घोर, घर घर काँपति सृष्टि सब ।
सुनि महिरावण शोर, निज दल लीन्ह हँकारि तब ॥

दीन्ह रजाय सु सुभट बोलाई । चलो बेगि रण करो लड़ाई
मनुज भालु रजनीचर बन्दर । आये चढ़ि अथांकपुर अन्दर
अब न कोउ रण रहब भुखारी । मनुज भालु कपि खाजि सुसारी
खाव धरो नहि मारि पछारो । शूल गदा आसी शिर पर वारो
अट्टहास करि सैन चलावा । आप राम के सन्मुख आवा
अवध लङ्क दल दोउ यक साथा । सहित विभीषण औ रघुनाथा
कीश भालु दल दाहिन बाँये । चल रिपु सन्मुख कदम उठाये
गे कपि भालु असुर दल पेली । काटैं दाँतन देइँ ढकेली
सुभट तमीचर पुनि उठि धावें । कीश बली महि मारि गिरावें

सो० । तब सुकोपि महिरावण, घालेसि तीर समीर ।
चले उड़ाई जीव लै, हय गय दल सब धीर ॥

सो० । गे उड़ि निज निज धाम, हनूमान सिय राम तजि ।
रहा न कोउ संग्राम, सतज छोड़ि जो बहुत रण ॥

चला तमकि के पुनि महिरावन । हगाजिम्हि शोणित रूप भयावन
का कहिये तेहि रथ कि बड़ाई । अति उतङ्ग रवि चन्द्र छिपाई

तब मारुत सुत कीन्ह उपाई । रथते द्विगुणित चरण बढ़ाई
दीरघ रूप धर्यो हनुमाना । ऊर्ध्वबाहु कर लीन्ह विमाना
तापर राजत श्री रघुराई । लीन्ह पुष्प सम शीश उठाई
तब रघुनाथ अनल शर मारा । शत्रु कटक सब भा जरि छारा
बहु राक्षस ले जीव पराने । बहुत भागि गिरि खोह समाने
बहु तक रुण्ड मुण्ड बिनु लोटैं । तापर काक गीध की चोटैं
देखि दशा रिपु भयो मलीना । तीर कमान क्रोध करि लीना

दो०। सहस तीर सँभारि के, खेंचि श्रवण लगि तान।
आय परा छाती उपर, भे मूर्छित भगवान ॥

सो०। लखि मूर्छित श्री राम, भयो शोक दारुण सुरन।
पुष्पक पर बिश्राम, करत भये रघुकुल तिलक ॥

हर्ष विषाद न सिय उर आनी । बैठीं मौन साधि महरानी
तनक नहीं सुख याहि उदासी । आदि शक्ति निर्गुण सुखरासी
ऋषि मुनि सुर सब शोर मचावा । कह दुख देख न उठे उठावा
दुखित देखि सुर मुनि समुदाई । हँसी उठाय सिया हरषाई
लीन्ह रूप धरि सिय महकाली । इष्टदेव मम दीन दयाली
परी शिरोध शिरन की माला । भुजा चारि बल अतुल बिशाला
घरसा उलङ्ग भपट प्रलयासी । जीह अरुण मुख बहिर निकासी
पाश शूल किरपाण कपाला । शोभित कर शिर केश कराला
भौंह बङ्क अपाङ्ग सुरङ्गी । मलक चक्र चितवन तिरभङ्गी

दो०। किय उत्पन्नहि अङ्गते, शक्ती असित कराल।
रूप भयंकर देखि के, काँप्यो स्वर्ग पताल ॥

सो०। कोउ कवि सकैं न गाय, रूप श्याम जगदम्बको।

अद्भुतकला दिखाय, कीन्ह चरित पावन बिमल ॥
आदिज्योति भगवति महमाई । तासु चरित सुनिये मन लाई
कीन्ह कटक रिपु केयय मारा । लागी मर्दन अस्त्र पँवारा
मारि खड्ग रिपु दल सब काटा । परे न धरणि रुधिर सब चाटा
शत्रु बाहिनी करि संहारा । पुनि सकोपि महिरावण मारा
लखि कौतुक नभ सुर अनुरागे । बर्षि सुमन यश गावन लागे
करि अस्तुति बोले मृदुबानी । अब निज रूप धरहु महरानी
जबै सुरन बहु बिनय सुनाई । धर्यो रूप निज सिय हर्षाई
भई लुप्त शक्ती सभा माहीं । सियारूप लखि सुर हर्षाहीं
जयजय कहि मृदु बचन उचारे । सुर हित तुम सुररिपु रण मारे
दो०। कीन्ही कृपा सुरन पर, दारुण शोक मिटाय ।
करिय प्रशंसा कौन तुव, गति बरणी नहिं जाय ॥
सो०। अज परस्यो निज हाथ, सन्मुख सबके राम उर ।
गइ मुर्च्छा सिय नाथ, हैं उठ बैठ बिमान ते ॥



शिव बिरञ्चि सनकादि मुनीशा । आय राम ढिग दीन्ह अशीशा
तब कमलज सब कथा बखानी । जेहि बिधि कीन्ह बिजय महरानी
बिहँसि जानकी कह सुर ओरी । है बिचित्र अद्भुत गति मोरी

जो न प्रकट करती प्रभुताई । तौ किमि जनत्यो मम मनुसाई ॥
कोटि भाँति सुरयत्न लगावैं । तबहूं मोर मर्म नहिं पावैं ॥
होयँ गगन जो लाखों भानू । मोरे सन्मुख रेणु समानू ॥
अस कहि चमक विचित्र दिखाई । बज्र रिद्मकि नभ माहिं समाई ॥
तब रघुनाथ जोरि युग हाथा । करि दण्डवत नवायो माथा ॥
विविध भाँति अनुमोदन कीन्हा । पुनि सिय रूप सिया धरि लीन्हा ॥

सो०। हाथ जोरि शिर नायकै, विदा देवता माँगि ।
चले प्रशंसा करत मन, उमँगि उमँगि अनुरागि ॥

सो०। गे सुर निज निज धाम, दै अशीष अन्तरहिये ।
आय अवध श्रीराम, सहित जानकी पवनसुत ॥

बैठि सिंहासन सिय रघुराई । देवन सुमन वृष्टि झरि लाई ॥
जय जय जय धुनि त्रिभुवन छाई । कीन्ह सुरन पुनि अस्तुति आई ॥
बोले बालमीकि तप धारी । भरद्वाज सुनु विनय हमारी ॥
कथा अखिल मैं तुम सों गाई । हरिगाति अद्भुत कहि न सिराई ॥
भगवत चरित अनन्त अपारा । कहि कवि कोविद पावन पारा ॥
भरद्वाज सुनि मुनि वर बानी । भक्ति विवेक प्रेम रस सानी ॥
बालमीकि सन्मुख कर जोरी । कहु का करौं प्रशंसा तोरी ॥
सुनि हरि कथा अमीरस बोरी । भई तृपित तिरिया सब मोरी ॥
पुलकि शरीर हर्ष उर लाई । गे निज भवन मुनिहिं शिर लाई ॥

दो०। करि अस्तुति सब देवगण, गमने निज निज धाम ।
राजत राज सिंहासन, सहित जानकी राम ॥

सो०। बालमनी कर जोरि, करत विनय करुणायतन ।
करु रक्षा अब मोरि, माहिं लागि आरति हरन ॥

भक्तयनुसार सुकृत कवि ज्ञानी । गुणानुवाद हरि करें बखानी
भक्ति सो वह सकों ख्यहिं नाहीं । सत्य कहौं लिखि कागद माहीं
जो गुणगान कहै मोहिं कोई । नहिं जानत अनजानत सोई
गुण न रहित सब कविकृति मोरी । कायर गर्व करौं मति भोरी
भाषा भणित एक नहिं मोरे । छन्द प्रबन्ध न जानौं भोरे
उर्दू प्रति से भाषा गाई । जानि सनेह राम सुखदाई
केवल याहि महँ नाम अधारा । कहैं तरैं भवसिन्धु अपारा
हैं हरिभक्त जो कहैं सुनाई । सुनैं सो सुजन श्रवण चितलाई
तिन सबसों या बिनय हमारी । होइ चूक तो लेउ सुधारी
दो० । लालमनी सब तर्क तजि, भजिले सीताराम ।
करिहैं पूर मनोरथहि, निशि दिन आठों याम ॥
सो० । छोड़ि कपट मद मोह, काम क्रोध से दूर रहु ।
करहु न सबसों छोह, लालमनी सियराम भजु ।
दो० । जिमि विषयी रुचि कामिनी, तिमि जो हरि पद होय ।
जाय चलो सुरधाम को, मग नहिं रोके कोय ॥

इति श्री अद्भुतरामायणं लालमणि विरचितं समाप्तम् ॥